ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 03, सितम्बर 2004, मूल्य 5.00

हैदाराबाद - शान्ति सरोवर के प्रथम चरण का उद्घाटन करते हुए हैदराबाद के पूर्व मुख्य मन्त्री तथा वर्तमान विपक्ष के नेता भ्राता एन. चन्द्र बाबू नायडू, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर जी, ब्र.कु. प्रीतम बहन तथा अन्य। 2. नवनिर्मित शान्ति सरोवर का एक विहंगम दृश्य।
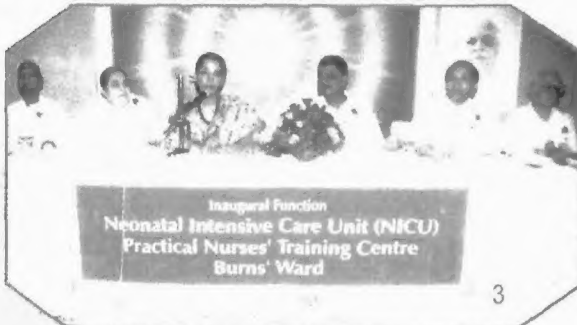
1. हैदराबाद - सद्भावना भवन का उद्घाटन करते हुए हैदराबाद के मुख्यमन्त्री भ्राता राजशेखर रेड्डी जी तथा राजयोगिनी दादी जानकी जी। गृहमन्त्री भ्राता के. जाना रेड्डी तथा अन्य भी साथ में हैं। **2. मुम्बई (डोंबिवली)** - महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री भ्राता सुशील कुमार शिंदे से ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. प्रतिभा बहन तथा ब्र.कु. तेजा बहन। **3. मुम्बई (अन्धेरी)** - बीएसईएस एमजी हॉस्पिटल में एन.आई.सी.यू., नर्सेज़ प्रशिक्षण केन्द्र तथा बर्नस् वॉर्ड के उद्घाटन अवसर पर अभिनेत्री तथा समाज सेविका बहन शबाना आज़मी सम्बोधित करती हुई। भ्राता गोपीचन्द गुप्ता, ब्र.कु. योगिनी बहन, भ्राता रमेश नाइक, बी.एम.सी की जन स्वास्थ्य कमेटी के अध्यक्ष तथा डॉ. भ्राता अशोक मेहता जी भी मंच पर उपस्थित हैं। **4. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)** - महिला सेमिनार का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य विशिष्ट महिलाएँ। **5. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)** - सुरक्षा प्रभाग के सेमिनार का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा भारतीय थल सेना के उपाध्यक्ष ले. जनरल जे.बी.एस. यादव। साथ में हैं ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. अचल बहन, ब्र.कु. शीलू बहन तथा अन्य। **6. पाण्डीचेरी** - ब्र.कु. रेनुका बहन, ब्र.कु. जयलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. रामलोचन भाई तथा अन्य, पाण्डीचेरी के राज्यपाल महामहिम भ्राता मदन मोहन लाखेरा से राजभवन में ज्ञान-चर्चा के बाद समूह चित्र में। **7. डुंगरपुर** - भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डुंगरपुर महाराजा भ्राता राजसिंह, विश्वविख्यात चमत्कारी चिकित्सक भ्राता मौलाना इम्तियाज़ हुसैन मलिक, मेवाड़ दूध डेरी के मालिक भ्राता डूंगरलाल जी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. पद्मा बहन तथा अन्य 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में। **8. केन्या (किसुमु)** - इन्टरफेथ डायलॉग कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. वेदान्ती बहन, भ्राता पैट स्मिथ, ज्ञानी गुरु सिंह कोमल तथा मधुकर भाई।

संजय की कलम से –

दिव्यता से सम्पन्न श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी थे, सोलह कला पवित्र थे। आज लोग कला का अर्थ नृत्य कला, संगीत कला इत्यादि मानते हैं और वे समझते हैं कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में, रास रचाने में, युद्ध लड़ने में निपुण थे और इस प्रकार सोलह कला सम्पन्न थे। परन्तु वास्तव में कला का अर्थ दर्जा (degree) है। चाँद अमावस्या के बाद से लेकर पूर्णमासी तक प्रतिदिन जितना बढ़ता है उसे कला कहते हैं। पूर्णमासी के दिन वह सोलह कला सम्पूर्ण प्रकाशमान होता है। इसी प्रकार, श्रीकृष्ण को 'सोलह कला सम्पूर्ण' कहने का अर्थ यह है कि वह पूर्ण पवित्र थे, उनमें अपूर्णता न थी। यह महिमा किसी महात्मा, गुरु या व्यक्त देवता की नहीं है। अत: अन्दाज़ा लगाना चाहिए कि वह कितने उच्च थे; कितने महान् थे! जन्म-अष्टमी के दिन ऐसी दिव्य आत्मा का जन्मदिन मनाया जाता है। यह किसी साधारण आत्मा या सामान्य महात्मा का जन्मदिन नहीं है। इसलिए इसे समझ कर मनाना चाहिए।

अपने हृदय को टटोलिये

अत: जन्माष्टमी के शुभ दिन पर अपने अन्त:करण में झाँक कर देखने की आवश्यकता है। श्रीकृष्ण को 'मनमोहन' कह छोड़ने से लक्ष्य की सिद्धि नहीं होगी, बल्कि इस समय अपने हृदय को परखने की आवश्यकता है कि हमारे मन को वास्तव में श्याम ने मोह रखा है या 'काम' ने? अपने अन्दर विकार हैं तो यह समझ लीजिए कि बाहर 'श्रीकृष्ण, गोविन्द ....'आदि पद गाने से सद्गति नहीं होगी। यह तो "बगल में विकारों की छुरी और मुँह में राम-राम" वाला किस्सा हो जायेगा अथवा "दिल्ली शहर नमूना, अन्दर मिट्टी बाहर चूना" वाली उक्ति लागू होगी।

अत: यदि श्रीकृष्ण से आपको सचमुच प्यार है और उसके वैकुण्ठ में आप जाना चाहते हैं तो पूर्ण पवित्र बनो क्योंकि विकारी और आसुरी स्वभाव वाली आत्माएँ वैकुण्ठ में नहीं जा सकतीं और उनका श्रीकृष्ण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण तो सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण और सम्पूर्ण अहिंसक थे; अत: देखना चाहिए कि स्वयं मैंने कहाँ तक दैवी गुण धारण किए हैं और पवित्रता की कितनी कलाएँ अपनायी हैं। अपनी धारणा की ओर ध्यान दिए बिना तो दो युगों की भक्ति से भी कोई विशेष फल नहीं मिलता।

श्रीकृष्ण ने पूज्य देवपद की प्राप्ति कैसे की?

श्रीकृष्ण का पद कितना महान् था। श्रीकृष्ण को महात्मा लोग भी पूजते हैं और राजा भी। श्रीकृष्ण को महात्माओं और राजाओं दोनों के ताजों से युक्त दिखाया जाता है अर्थात् उन्हें प्रभा-मण्डल (Crown of Light) और स्वर्णमुकुटधारी चित्रित किया जाता है।

शेष पृष्ठ....28 पर

अमृत-सूची

सम्पादकीय ....

समय की पुकार

वर्तमान संसार में धार्मिक पुस्तकों का चारों ओर अम्बार लगा हुआ है। एक-एक धर्म की हज़ारों की संख्या में पुस्तकें बाजार और पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। धर्मग्रन्थ उसी पुस्तक को कहा जाता है जिसमें स्वयं धर्मस्थापक के मुख से उच्चारे हुए महावाक्य संग्रहित होते हैं। संसार में मुख्य चार धर्मों के धर्मग्रन्थ क्रमशः श्रीमद्भगवद्गीता (आदि सनातन देवी-देवता धर्म), कुरान (मुस्लिम धर्म) धम्पद (बौद्ध धर्म) तथा बाइबल (क्रिश्चियन धर्म) हैं। अन्य-अन्य धर्मों के भी अपने-अपने ग्रन्थ हैं परन्तु उन सभी का उल्लेख इस छोटे-से लेख में करना सम्भव नहीं है। इन सभी धर्मग्रन्थों में इस बात पर विस्तार से चर्चा की गई है कि सृष्टि पर एक ऐसा समय आता है जब नैतिकता और सदाचार की पकड़ ढीली पड़ जाती है, मानव मनमानी करने लगता है, आदर्श धारणाएँ मिटने लगती हैं और पाप का वास कण-कण में हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में इसे धर्मग्लानि नाम दिया गया है। कुरानशरीफ में इसे 'कयामत' का समय कहा गया है। बाइबल में इसे 'Doomsday' या 'The Day of Last Judgement' नाम दिया गया है।

संसार भर में फैली हुई अभूतपूर्व हलचल, चारों तरफ दिखलाई पड़ने वाले मारकाट के चिह्न तथा विज्ञान के नए-नए आविष्कार, वैज्ञानिकों और धार्मिकों - दोनों के दिल में उथल-पुथल मचा रहे हैं। इंगलैण्ड से प्रकाशित एक पत्र में धार्मिक जनों की चिन्तायुक्त मानसिक अवस्था का वर्णन देखिए –

"क्या अन्तिम समय आ पहुँचा है! हमारे चारों तरफ अंधकार गहरा होता जाता है। झण्डे झुक गए हैं - पाप की वृद्धि हो रही है और संसार उस महान न्यायकर्त्ता के सम्मुख फैसले के लिए बढ़ता जा रहा है। लोगों में तरह-तरह के अनुचित कर्मों के साथ समझौता कर लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अब धर्म विरोधी अभियान चोटी पर पहुँच चुका है। इस अवसर पर भगवान ही सत्य मार्ग दिखला कर हमारी रक्षा कर सकते हैं, अन्यथा हम पूरी तरह शैतानियत में डूब जायेंगे।"

"इस समय संसार के राष्ट्र इतने अधिक हथियार-बन्द होते जाते हैं, जितने पहले कभी नहीं थे। क्योंकि सबने इस असत्य पर विश्वास कर लिया है कि हम जितना अधिक अणु बम तैयार करके रखेंगे उतना ही अधिक शान्ति कायम रह सकेगी। इस समय युद्ध के समर्थक चारों ओर यही प्रचार कर रहे हैं कि तुम्हारा विरोधी दहाड़ते हुए शेर की तरह चारों तरफ घूम रहा है कि वह किसको खा जाए। इसलिए तुम भी जल्दी-से-जल्दी अपनी रक्षा का प्रबन्ध करो। ऐसे प्रचार में बड़े-बड़े धार्मिकों, ईश्वर-भक्तों के भी बह जाने की संभावना हो जाती है।"

"यह अति आवश्यक है कि ऐसे अवसर पर हम शान्तचित्त से विचार करें कि हमारा कर्त्तव्य क्या है? हम जो कुछ निर्णय करेंगे वही हमारे भाग्य का फैसला करने वाला होगा। इस समय हम चौराहे पर खड़े हैं और सही अथवा गलत रास्ते का चुनाव करना हमारे ही हाथ में है। अगर हम सत्य रास्ते पर चले तो
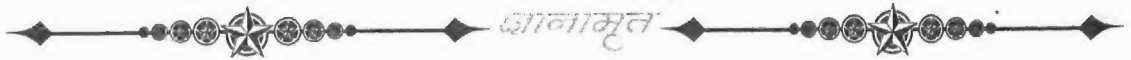
भगवान के राज्य में पहुँच जायेंगे और गलत मार्ग ग्रहण किया तो धर्म-विरोधी दल के चक्र में फँस कर नष्ट हो जायेंगे।"

ऊपर हमने एक उदाहरण लिया लेकिन वर्तमान समय सभी देशों के विद्वानों और ईश्वर-प्रेमी व्यक्तियों में यह भाव फैल रहा है कि अब मानव सभ्यता अग्रसर होते-होते ऐसे स्थान पर आ पहुँची है जहाँ उसकी गति रुद्ध हो गई है, उसमें तरह-तरह के दोष उत्पन्न होकर संसार को संकटजनक स्थिति में डाल रहे हैं। जिस प्रकार, बहता हुआ पानी किसी बड़े गड्ढे में रुक जाता है तो कुछ ही समय में उसमें काई और तरह-तरह के हानिकारक कीटाणु पैदा हो जाते हैं, उसी प्रकार, वर्तमान समय कुछ थोड़े से लोगों के हाथ में संसार की समस्त शक्ति और साधन आ जाने से समाज में असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। इसके परिणामस्वरूप मानव जाति की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो गई है और वह ऐसे मार्ग पर चल पड़ी है जो प्रकृति और दैवी विधान के प्रतिकूल है। कुमार्ग पर चलने वालों को विपत्ति में तो पड़ना होता ही है। अत: मानव जाति भी अपने विपरीत आचरणों का फल भोगने लगी है और उसकी सुख-शान्ति सिहर उठी है। इस समय न अमीर सुखी है, न गरीब। हराम की कमाई के कारण अमीर तरह-तरह के दूषित आचरणों में फंस जाता है तो अभाव तथा भुखमरी, गरीब को भी भला-बुरा जैसा भी काम करके पेट भरने को विवश कर रही है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इसके स्थापनाकाल से लेकर अब तक के 68 वर्षों की कालावधि में सभी आत्मिक भाइयों को यह सन्देश देता आ रहा है कि अब हम सतयुगी दुनिया के प्रारम्भ तथा कलियुगी दुनिया के अन्त के मध्यबिन्दु पर खड़े हैं। इस मध्यबिन्दु को ही कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है जबकि स्वयं निराकार परमात्मा शिव का प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन में अवतरण हो चुका है और वे सहजज्ञान, सहज राजयोग तथा दिव्यगुणों की शिक्षा मनुष्यमात्र को दे रहे हैं। **सदियों से परमात्मा को पुकारा, दर्शनों की अभिलाषा रखी और यह कहा कि जब आप आयेंगे तो आप पर बलिहार जायेंगे। अब उसके धरती पर आ जाने की सूचना पाकर भी अज्ञान निद्रा में सोए रहना और इस सूचना को साधारण बात समझ कर टालते रहना तो आलस्य और दुर्भाग्य का तथा ईश्वर के प्रति प्रेम की कमी का प्रतीक ही माना जाएगा।**

विभिन्न धर्मग्रन्थों में, सृष्टि के महापरिवर्तन के समय के जो चिन्ह बताए गए हैं, उनसे आज की परिस्थितियों का मिलान शत-प्रतिशत हो रहा है। हमारा आग्रह धर्मग्रन्थों को अपनी बात की पुष्टि के लिए आधार बनाना नहीं है परन्तु जो बातें हमारे सामने प्रतिदिन घट रही हैं, उन्हें जान कर, उनके प्रति जागरूक होने और उनसे प्रेरित होने का है। भारतीय तिथि-पत्र के अनुसार चालू वर्ष भी 13 मास का है। इसमें दो श्रावण हैं। अतिरिक्त श्रावण को पुरुषोत्तम मास की संज्ञा दी जाती है। धार्मिक जन इस मास को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं और यथाशक्ति दान, पुण्य, भक्ति, पूजा, कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि यह मान्यता है कि पुरुषोत्तम मास में किए गए किसी भी धार्मिक पुरुषार्थ का फल, सामान्य समय में किए जाने वाले धार्मिक पुरुषार्थ से कई गुणा अधिक होता है। पुरुषोत्तम मास के प्रति भक्तों का यह विश्वास कल्प पूर्व के संगमयुग की ही यादगार है और अब वही पुरुषोत्तम युग (पुरुषों में उत्तम बनाने वाला युग) अर्थात् मानव को देवता बनाने वाला युग हमारे सामने है। इसी समय के

लिए गायन है - "ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अन्धेर विनाश"। इसी समय भगवान का कलियुग को सतयुग में बदलने का कल्याणकारी कर्त्तव्य चल रहा है। वे स्वयं आत्माओं के समक्ष उपस्थित हैं और ज्ञान, गुण, शक्तियों और वरदानों के अखुट भण्डार सर्व पर लुटा रहे हैं। अब समय की पुकार है उन्हें पहचानने की, उनके वरदानों से झोली भरने की, उनके अलौकिक प्रेम से मन-बुद्धि को सराबोर करने की, अपनी सोई दिव्यता को जगाने की और दैवी लक्ष्य की प्राप्ति में जी-जान से जुट जाने की। भगवान की पहचान के लिए बुद्धि रूपी नेत्र पर से पुरानी मान्यताओं, दुराग्रहों, विकट विकारों और लापरवाही की धूल हटाना जरूरी है। विश्व की सर्व आत्माओं से हमारा अनुरोध है कि वे विवेक के चक्षु से सर्व प्रकार की नकारात्मक धूल हटा कर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थान-स्थान पर खुली शाखाओं के माध्यम से परमात्मा पिता के दिव्य कर्त्तव्य की जानकारी अवश्य हासिल करें, जन्म-जन्म की भक्ति का फल प्राप्त करें, सद्गति के मार्ग पर अग्रसर हों और कल्प के इस अन्तिम जन्म को हीरे तुल्य बना लें।

– ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश

बाबा का संसार मिला है

– ब्रह्माकुमार देवनारायण मिश्र, महेन्द्र नगर (नेपाल)

जन्म-जन्म के पुण्य कर्म का, फल हमको इस बार मिला है।
यह ब्राह्मण-परिवार मिला है, शिव बाबा का संसार मिला है।।

सभी विकार भेंट में लेकर, कितनी मीठी बोली कर दी।
रोज सवेरे की मुरली में, वरदानों से झोली भर दी।।

हमें फिकर अब क्या होगी, जब ऐसा पालनहार मिला है।
हम बच्चों को परमधाम से, रोज याद और प्यार मिला है।
यह ब्राह्मण-परिवार मिला है, बाबा का संसार मिला है।।

कल्प भर के बिछड़े बच्चों से, संगमयुग में मिलने आता,
कहता - दिल दो दिलाराम को, यूँ हमको उपराम बनाता,

सुख-शान्ति का दाता बाबा, सबका भाग्य-विधाता बाबा।
जब भी याद किया बाबा को, बाबा तो तैयार मिला है।।
यह ब्राह्मण-परिवार मिला है, बाबा का संसार मिला है।

ज्ञान, योग हमको सिखलाया, पवित्रता का पाठ पढ़ाया।
दिव्य गुणों से हमें सजाया, बन गई कमल-पुष्प सम काया।
हर श्रीमत 'हाँ जी' है बाबा, तू ही तो माझी है बाबा।
डूब रही थी नैया, तुझको पाकर हमें किनारा मिला है।
यह ब्राह्मण परिवार मिला है, बाबा का संसार मिला है।।

❑❑❑

सदा उत्साह में रहना और दूसरों को उत्साह दिलाना – यह अपना व्यवसाय बना लो।

पुरुषोत्तम संगमयुग – जीव सृष्टि की उत्पत्ति

ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

पुरुषोत्तम संगमयुग के बारे में प्रारम्भ की गई नई लेख माला के पिछले लेख में मैंने सृष्टि के निर्माण के बारे में वैज्ञानिकों के क्या मत हैं, उसके बारे में लिखा था। यह भी लिखा था कि सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में मत-एकता नहीं है और ना ही उस निर्माण के समय वैज्ञानिक उपस्थित थे और ना ही उन्होंने यह निर्माण की प्रक्रिया स्वयं देखी है। परिणामस्वरूप उनके जो मंतव्य हैं, वो 100% सत्य नहीं हो सकते। रचयिता ही रचना के बारे में सत्यता बता सकता है। रचना, रचयिता के द्वारा रचना कैसे हुई, उसके बारे में 100% सत्य बातें नहीं बता सकती। इस कारण वैज्ञानिकों का मंतव्य, वैज्ञानिक सत्य नहीं किन्तु वैज्ञानिकों का अनुमान है।

इस लेख में वैज्ञानिकों का जीवसृष्टि के निर्माण के बारे में क्या विचार है, उस बारे में चर्चा करेंगे। इस बारे में अनेक विचारधाराएँ हैं परन्तु इनमें से प्रमुख विचारधारा इंग्लैण्ड कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (Cambridge University) के प्राध्यापक चार्ल्स डार्विन की है। उन्होंने अपने विचार एक ग्रंथ के रूप में लिखे हैं जिसका नाम है 'The Original Species'। उनकी मान्यता के मुताबिक सृष्टि के प्रारम्भ में जब सृष्टि का निर्माण हुआ तब सृष्टि पर पानी ही था और पानी के अंदर छोटे जन्तु अर्थात् कीटाणु थे। जैसे आज भी पानी के अन्दर थोड़ी मिट्टी रखते हैं, तो मिट्टी द्वारा पानी में जन्तु पैदा हो जाते हैं। उसी प्रकार से यह एककोशी या एकलिंगी कीटाणु स्वयं उद्‌भव हो गए, पानी और हवा के आपसी संबंध-सम्पर्क से।

समय बीतते-बीतते उसी एककोशी कीटाणु के अन्दर उत्क्रांति हुई और एककोशी से वह द्विकोशी या द्विलिंगी बना। फिर उनमें उत्क्रांति होते-होते उन्हीं द्विकोशी जन्तु से थोड़े बड़े जन्तु उत्पन्न हुए और बड़े बनते-बनते पानी के अन्दर की जीवसृष्टि जैसे कि मछलियाँ आदि निर्मित हुई।

पानी की जीवसृष्टि में भी लाखों वर्षों के बाद ऐसे जन्तु पैदा हुए जो पानी के अन्दर तथा जमीन पर भी रह सकते थे अर्थात् वही पानी के जन्तु फिर जमीन पर आकर रहने लगे। फिर उनमें उत्क्रांति होते-होते जमीन के ऊपर रहने वाली जीवसृष्टि का निर्माण हुआ और कालान्तर में उत्क्रांति के सिद्धान्त के अनुसार उनमें से बन्दर बना और उसी बन्दर से फिर मनुष्य-सृष्टि का निर्माण हुआ। चार्ल्स डार्विन के इस सिद्धान्त को "उत्क्रांति का सिद्धान्त" (Theory of Evolution) कहते हैं। डार्विन ने अपनी पुस्तक की प्रस्तावना (Preface) में एक बात बहुत स्पष्ट रूप में लिखी है कि उनके द्वारा प्रतिपादित विकासवाद के सिद्धान्त में बहुत त्रुटियाँ हैं। इस कारण यह सिद्धान्त, सिद्धान्त नहीं है सिर्फ मान्यता है। उन्होंने यह भी लिखा है कि भविष्य के वैज्ञानिकों की पीढ़ियाँ उनके सिद्धान्तों की कमियों को पूरा करेंगी। इसी कारण कई अन्य वैज्ञानिकों ने मनुष्य के पूर्वज बन्दर नहीं परन्तु अन्य कोई पशु रहे होंगे, ऐसा सिद्ध किया है। जैसे – एक वैज्ञानिक ने सिद्ध किया है कि गोरिल्ला बन्दर की तरह भालू (Bear) भी दो पाँव पर खड़ा रह सकता है और उसका पारिवारिक जीवन मानवीय पारिवारिक जीवन से बहुत मिलता-जुलता है। इसलिए मनुष्य का पूर्वज बन्दर नहीं बल्कि भालू है। एक वैज्ञानिक प्राध्यापक विल्सन (Wilson) ने बताया है कि चींटियों की समाज व्यवस्था मनुष्य

की समाज व्यवस्था से बेहतर है, इसलिए चींटियाँ मनुष्य की पूर्वज हैं। वैज्ञानिक पिंगल्टन (Pingleton) के सिद्धान्त के अनुसार उन्हें एक बन्दर का दाढ़ (molar teeth) मिला और उसी से उन्होंने अनुमान लगाया कि बन्दर ही मनुष्य का पूर्वज है। बाद में ज्यादा जाँच करने से पता पड़ा कि वह दाढ़ बन्दर का नहीं बल्कि सुअर (Pig) का है और इस प्रकार, उनके मंतव्य के मुताबिक मनुष्य के पूर्वज सुअर हैं।

डार्विन ने भी गोरिल्ला बन्दर के अस्थिपिंजर देखे। उसमें से एक अस्थिपिंजर आज भी सुरक्षित है जिसे मनुष्य और बन्दर की बीच की कड़ी माना गया है। उसके साथ उन्हें एक डंडा भी मिला जिसको देख कर यह निश्चित किया गया कि हमारे पूर्वज जब जंगली अवस्था में थे तब उनके हाथ में शिकार करने के लिए यह डंडा रहता था। डंडा तथा वह अस्थिपिंजर आज भी जर्मनी के एक संग्रहालय में रखा हुआ है। बाद में आने वाले वैज्ञानिकों ने प्रयोग करके यह सिद्ध किया कि वह अस्थिपिंजर गोरिल्ला का नहीं बल्कि गठिया (Arthritis) से पीड़ित एक मनुष्य का था इसलिए वह बन्दर और मनुष्य के बीच की कड़ी (missing link) नहीं हो सकता और हमारे पूर्वज बन्दर नहीं थे। डंडे पर उन्होंने जब प्रयोग किए तो पता चला कि उस पर बारीक नक्काशी (लकड़ी पर खोद कर बेल-बूटे बनाने का काम) की गई है जिसे देखने के लिए भी सूक्ष्मदर्शी (Microscope) की ज़रूरत पड़ती है। इतनी सूक्ष्म और महीन नक्काशी करने वालों को जंगली कैसे कह सकते हैं, यह भी एक प्रश्न है।

डार्विन के विकासवाद को चुनौति देने वाले अनेकानेक मत वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए किन्तु फिर भी आज भी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में जो पढ़ाया जाता है वह डार्विन का पुराना सिद्धान्त ही है। जिसका अर्थ है कि हमें वैज्ञानिकों के सिद्धन्तों की अयथार्थता सिद्ध करने की फुर्सत नहीं है और परिणामस्वरूप नई उभरती हुई युवा पीढ़ी जो विश्वविद्यालय से बाहर निकलते ही जीवन के रंगमंच पर आ रही है, वो तो यही समझती है कि विज्ञान और वैज्ञानिक जो कहते हैं वो ही सत्य है। इस प्रकार, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के छात्रों को ये वैज्ञानिक मान्यताएँ, वैज्ञानिक सत्य के रूप में पढ़ा कर छोटी आयु में ही हम उन्हें नास्तिक बना देते हैं।

सन् 1971 में मैंने पिटरसबर्ग की युनिवर्सिटी में "परमात्मा का दिव्य अवतरण" विषय पर प्रवचन किया था। तब वहाँ के प्राध्यापकों ने डार्विन के इस सिद्धान्त पर मीमान्सा करने के लिए मुझे कहा था। दो घण्टे तक उसी पर चर्चा चली। अन्त में वहाँ के विद्वान श्रोतागण भी आश्चर्यचकित होकर इस बात पर सहमत हुए कि विज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार के भ्रांत सिद्धान्तों का अभ्यास कराना ठीक नहीं है। वैज्ञानिकों के सिद्धान्तों के बारे में सर आइजॅक न्यूटन ने यह सत्य कहा है कि सत्य हमेशा सापेक्ष होता है। आज के दिन जो सत्य है, कल कोई नई बातें होती हैं तो आज का सत्य कल मान्यता हो जाता है। इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का दृढ़ विश्वास है कि सनातन सत्य एक शिव परमात्मा ही हमें बता सकते हैं।

डार्विन का विकासवाद का सिद्धान्त तथा भारतीय तत्वज्ञान के सिद्धान्त थोड़े मिलते-जुलते हैं। डार्विन ने पहले एककोशी जीव अमीबा, बाद में मछली अर्थात् जलचर फिर स्थलचर - बन्दर-मनुष्य इस प्रकार उत्क्रांति मानी है। दशावतार में पहले मछली के रूप में दिव्य अवतरण परमात्मा का। बाद में वराह अवतार माना गया और फिर कुर्म अवतार जो जलचर और स्थलचर दोनों प्रकार के होते हैं। फिर नृसिंह अवतार अर्थात्

पशु और मनुष्य के बीच की कड़ी के रूप में अवतार। फिर मानव परन्तु वामन अर्थात् छोटे कद का और यह वामन फिर विराट बनता है। और परशुराम अर्थात् युद्ध, हिंसा और परशु जैसे शस्त्र धारण करने वाला। फिर 14 कला सम्पूर्ण राम और बाद में पूर्ण पुरुषोत्तम कृष्ण के रूप में अवतार। फिर अहिंसा का संदेश देने वाले गौतम बुद्ध और अंत में विनाश के समय कल्कि अवतार। इस प्रकार, दशावतार में भी एक प्रकार का विकासवाद या उत्क्रांति ही है चाहे शारीरिक, चाहे मानसिक या वैचारिक मानी जाए। दशावतार का सिद्धान्त उत्क्रांति के सिद्धान्त से थोड़ा मिलता-जुलता है, ऐसा भारत के कई तत्वज्ञानी मानते हैं, यह बात पाठकगण को बताने के लिए लिखता हूँ।

जीवसृष्टि के निर्माण के बारे में ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म में भी लिखा गया है। आदम और ईव या हूर (Adam & Eve) की कहानी बताई गई है जिसमें आदम और ईव को सेब (apple) खाने से निषेध किया गया था। लेकिन आदम और ईव या हूर ने उस निषेधित सेब का सेवन किया जिस कारण मनुष्य सृष्टि का निर्माण हुआ। ईसाई और इस्लाम धर्म के अनुसार आदम और ईव या हूर मनुष्य सृष्टि के पूर्वज थे और वे सब स्वर्ग में रहते थे। यहाँ इन सभी सिद्धान्तों की थोड़े में व्याख्या की गई है क्योंकि हमारा लक्ष्य तो परमात्मा शिव द्वारा बताए गए पुरुषोत्तम संगमयुग अर्थात् 5वें युग की महत्ता को समझाना है। सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ, उसका संक्षिप्त विचार ही यहाँ लिखा गया है। इनके बारे में विस्तार से या दोनों पक्ष लेकर सैद्धान्तिक चर्चा नहीं कर रहा हूँ। अगले लेख में हिन्दू अर्थात् आदि सनातन देवी-देवता धर्म का सृष्टि के निर्माण के बारे में क्या विचार है, उस बारे में चर्चा करेंगे।

✧✧✧

बहे हृदय अमृत की धारा

– ब्रह्माकुमार हरिशंकर, जालन्धर

ऐसी लगन लगाओ बच्चे, बहे हृदय अमृत की धारा।
पड़े न छाया मान-अपमान की, आओ विश्व-विषमता हर लें।
देह-भान को दूर भगा कर, तन-मन अपना पावन कर लें।
विषय सागर की विषम व्याधि, दूर कहीं कर जाए किनारा।
ऐसी लगन लगाओ ....

धरती पर खुशहाली छाए, पुलकित होवे मन का अम्बर।
फूले-फले बहुरंगी फुलवारी, झर-झर झरे प्रेम का निर्झर।
महक उठे पुनः मन का आँगन, चमक उठे फिर भाग्य सितारा।
ऐसी लगन लगाओ ....

ऊँच-नीच का भेद नहीं हो, वासी हम सब एक वतन के।
छलक उठे खुशी हर चेहरे पर, धनी बनें हम ज्ञान-रत्नों के।
पल-पल नव उल्लास भरा हो, सर्व हित होवे ध्येय हमारा।
ऐसी लगन लगाओ ....

खुद पर दया करो हे आत्मन, माया कभी बने न बाधक।
राजयोग के नित्य प्रयोग से, बने रहें हम सच्चे साधक।
चहुँ दिशाएँ गूँज उठें, हो पवित्रता का ऐसा नारा।
ऐसी लगन लगाओ ....

'पत्र' सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत मासिक पत्रिका सचमुच जीवन को पलटाने वाली है। पत्रिका का हर एक लेख पढ़ने के बाद मन में एक नई स्फूर्ति आती है और उमंग बढ़ता है जो जीवन को श्रेष्ठ मार्ग की तरफ ले जाता है। जून माह के सम्पादकीय "नष्टोमोहा - नष्टोघृणा" को पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। अब तक तो केवल नष्टोमोहा का पाठ पढ़ा था लेकिन नष्टोघृणा का लेख पढ़ने के बाद जब विचार-सागर मन्थन किया तो पाया कि नष्टोमोहा की तरह नष्टोघृणा भी जरूरी है। इसी प्रकार, "पवित्र धन एवं मातेश्वरी सरस्वती" लेख में मम्मा के सन्दल पर बैठ वाणी शुरू करने से पूर्व बाबा की याद में किए गए संकल्प का वर्णन बहुत अच्छा लगा। मैं भी बाबा की याद में रह कर कैदी भाइयों के साथ ज्ञान-वार्तालाप करता हूँ तो उसमें विशेष शक्ति होती है। इस लेख से मेरे मन में और अधिक जागृति आई है। इस प्रकार, दोनों लेख बहुत ही प्रेरणादायक हैं और जीवन को पलटाने वाले हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

– ब्रह्माकुमार शिवनाथ सिंह (दरोगाजी), गुडगाँव

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवं आप सबके अथक प्रयास से आज 'ज्ञानामृत' करोड़ों आत्माओं को शान्ति, सुकून व संबल प्रदान करती हुई शान्ति की स्थापना में, सद्भावना की राह में चल पड़ी है। अपनी ज्ञान-किरणों से अज्ञान अंधकार को चीरते हुए, स्वर्णिम सुबह की शुभ आशा में प्यासी आत्माओं की प्यास बुझा रही है। इसकी हरेक आत्मा को आज महती जरूरत है। आने वाले समय में यह पत्रिका सात समन्दर पार कर, सारे विश्व की प्यास बुझा कर विश्व बंधुत्व की स्थापना का बेजोड़ मिसाल बनेगी, यही हमारी शुभकामना है।

– रामलखन विश्वकर्मा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

जुलाई 04 मास की ज्ञानामृत पत्रिका मिली। इसके ज्ञानवर्धक लेख पढ़ कर अति खुशी हुई। सबसे पहले माननीया दादी जी का शुभाशीष हृदय को छू गया। "राष्ट्रपिता और विश्वपिता दोनों का प्यार मिला मुझे", "स्वर्णिम युग" व रोंगटे खड़े कर देने वाली मार्मिक कहानी "प्रभु ने लुटाया प्यार और दुलार" बहुत अच्छे लगे। "स्वर्णिम युग" भी बड़ी अच्छी लेखमाला है। आपका सम्पादकीय "सौन्दर्य प्रतियोगिता" का विवेचन किया कि वास्तविक सौन्दर्य क्या है? यह आज की नारी की बुद्धि को खोलने वाला है। समाज पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। ऐसे लेख दूसरे समाचार पत्रों में भी देने चाहिएँ।

– रघुबीर भाई (पत्रकार), जालन्धर

ज्ञानामृत की 40वीं वर्षगाँठ पर हार्दिक शुभकामनाएँ! दादी प्रकाशमणि जी का स्नेहयुक्त आशीर्वाद मिला। "शुभाशीष" समाज से जुड़ने को प्रेरित करता है। कल्याणकारी अमृत को बाँटने के लिए आप जिस त्याग और समर्पण भाव से जुटे हैं वह शिव बाबा की कृपा का प्रताप है। "बहुजन हिताय- बहुजन सुखाय" के जिस पावन लक्ष्य को साधने में आप पिछले 39 वर्षों से जुटे हैं वह बेमिसाल है। प्यारा बाबा आपको और अधिक ताकत, ज्ञान, सामर्थ्य दे, हमारी यही शुभकामनाएँ हैं।

– राजीव अरोड़ा, चरखी दादरी

जून 04 की पत्रिका में प्रकाशित लेख "नष्टोमोहा-नष्टोघृणा" का प्रस्तुतीकरण बहुत ही उत्तम था जिसे हर कोई आसानी से समझ सकता है। आपने राग और द्वेष से बचने के लिए जो युक्तिसंगत टिप्पणी की है उसके लिए हार्दिक धन्यवाद। शीलू बहन द्वारा लिखित "सकारात्मक सोचने की कला" लेख ने हृदय को छू लिया। बहन जी वाचा के साथ-साथ अपने लेखन से बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रभु प्रसाद बाँट रही हैं। आशा है ज्ञानामृत पत्रिका इसी प्रकार आवश्यकतानुसार हमें ज्ञान-अमृत पिला कर परमात्मा के कार्य में सहयोग करती रहेगी।

– ब्रह्माकुमार किशन, सोजत सिटी

जुलाई 04 की ज्ञानामृत पत्रिका में "परमात्मा की एक-टिक स्मृति ही योग है" इस लेख से योग की चेकिंग होती है। हम भाई-बहनें आगे बढ़ते हैं। ऐसा आपकी तरफ से मार्गदर्शन मिलता है। ऐसे ही बार-बार नये-नये विचार भेजना जी। जैसा आपका नाम वैसा आपका काम भी है।

– ब्रह्माकुमारी सिंधु तथा राजेश्वर, हैदराबाद

★★★

परचिन्तन छोड़, आत्म चिन्तन कीजिये

ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत

चिन्तन करना, सोचना अथवा मनन करना यह मन की शक्ति है। चिन्तन अगर श्रेष्ठ हो, आत्म-चिन्तन हो या परमात्म चिन्तन हो, तो वह अवश्य लाभकारी होगा। लेकिन मन हमेशा ही इस प्रकार का सकारात्मक चिन्तन नहीं करता क्योंकि आत्मा देह-अभिमान के वश है, तो मन कई प्रकार के नकारात्मक चिन्तन भी करता है जिसे हम परचिन्तन या परनिन्दा कहते हैं। परचिन्तन अर्थात् दूसरे का अवगुण ग्रहण कर उसको चित्त पर रखना, उसके विषय में सोचना और फिर कइयों के आगे वर्णन करना। परचिन्तन और परनिन्दा करने वाला व्यक्ति अपना श्वास, संकल्प, शक्ति सब कुछ व्यर्थ गँवाता है। अन्त में उसको कोई भी प्राप्ति नहीं होती। वह अपनी ही शक्ति को व्यर्थ गँवा कर चिन्तित रहता है। उसकी तुलना हम गन्द और कीचड़ पर बैठने वाली मक्खी से कर सकते हैं। यह मक्खी गन्दगी खाती है और जहाँ भी जाती है वहाँ रोग फैलाती है। लेकिन आत्म-चिन्तन और स्वचिन्तन करने वाला व्यक्ति मधुमक्खी जैसा होता है। वह फूलों का रस चूसती है और उसी से मधु तैयार करती है। आत्म-चिन्तन करने वाला व्यक्ति भी श्रेष्ठ चिन्तन से, अनेकों को सुख पहुँचाता है। परचिन्तन करने वाला अवगुणों का वर्णन कर अनेकों को दु:ख पहुँचाता है।

देखा गया है कि औरों की भूलें वर्णन करना बहुत सहज है। किसी का गुण देख कर वर्णन करना थोड़ा-सा कठिन है क्योंकि नकारात्मक बातों में ध्यान जल्दी जाता है। दोष देखना, दोष वर्णन करना, किसी के दोष अपने चित्त पर रखना, यह बहुत सहज है। जिस व्यक्ति के अन्दर ऐसी भावनाएँ हैं मानो उसका जीवन बरबाद है क्योंकि दोष देखने और वर्णन करने से आत्म-चिन्तन और परमात्म-चिन्तन का सुख इन्सान ले नहीं सकता है। जिस व्यक्ति में निन्दा करने की दिलचस्पी होती है वह तो मौका ढूँढ़ता है कि कोई किसी के अवगुण बताए और वह उन्हें सुन कर, चित्त पर रख कर फिर वर्णन करे। वही उसका धन्धा बन जाता है। फलस्वरूप उस व्यक्ति से सभी डरते हैं कि यह हमारा अवगुण न फैला दे। देखिए, उस व्यक्ति का क्या स्थान होगा समाज में! वह कभी भी सच्चा सुख अनुभव कर नहीं सकता। अनुभव कहता है कि जिसकी निन्दा करने की आदत है वह अवश्य ही यह जान ले कि कल उसकी भी 10 गुणा, 20 गुणा, 100 गुणा निन्दा होगी क्योंकि जैसा करेंगे वैसा पायेंगे। संसार गुम्बज की तरह है जिसमें आवाज करने पर वह हज़ार गुणा होकर वापस मिलती है। जितनी दिलचस्पी रखेंगे परनिन्दा में उतनी आत्मा कमजोर हो जाएगी। जिस व्यक्ति के अन्दर कमी-कमजोरी, बुराई है वह खुद ही परेशान है। अगर हमने उसकी बुराई को अपने चित्त पर रखा तो मानो दूसरे के कीचड़ को अपने घर में स्थान दिया। क्या हाल होगा हमारे घर का? अत: हम लक्ष्य रखें कि हमें किसी का अवगुण नहीं देखना है, किसी के बारे में बुरा नहीं सोचना है। जो बुरा करता है, बुरा ही फल पाएगा परन्तु मैं बुरा सोच करके खुद को बुरा क्यों बनाऊँ। अगर मैं गुणवान बनना चाहती हूँ तो मुझे किसी के अवगुण चित्त पर नहीं रखने हैं। हमें तो गुण चोर बनना है। मान लीजिए, किसी के अन्दर शान्ति का गुण है, शीतलता का गुण है और हमें वह अच्छा लगता है तो उसे ग्रहण कर लें। कोई हर बात में मुस्करा रहा है। कितनी भी उसके आगे समस्याएँ आ रही हैं फिर भी वह सहनशील है, दु:खी और चिन्तित नहीं हो रहा है, तो उस गुण

को हम ग्रहण कर लें। हम उससे पूछ सकते हैं कि आप में यह कला कैसे आई, आपने यह गुण कैसे ग्रहण किया। इस प्रकार उससे हम सीख सकते हैं परन्तु किसी को हम गिरा हुआ समझ और गिराएँ नहीं। अगर कोई गिरा हुआ हो तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसको चढ़ाएँ, उमंग-उत्साह दिलाएँ। अगर किसी में अवगुण है तो हम यह सोचें कि उसके अवगुण को निकालें कैसे?

अवगुण निकालने का तरीका है कि उस आत्मा के प्रति शुभ-भावना रखें, शुभ कामना रखें और भगवान से प्रार्थना करें कि हे भगवान, हे ईश्वर, इस आत्मा को श्रेष्ठ बुद्धि दो ताकि यह अपना अवगुण महसूस करे और उसे निकाले। हो सकता है कि वह व्यक्ति खुद भी न जानता हो कि मुझमें यह अवगुण है। कई बार किसी में आवेश, क्रोध और अधीर बनने की आदत होती है। लेकिन समय, स्थान, स्थिति, परिस्थिति इन सबको माप कर, तोल कर फिर हमें कोई भी बात कहनी चाहिए। एक महिला के 20 साल के बेटे ने आत्महत्या कर ली, वह अपना दु:ख वर्णन कर रही थी। उसने हमें बताया कि पहले तो बहुत लाड-प्यार किया बच्चे को। जितना धन चाहता था उतना धन देती रही और बेटा बुरी संगत में फँस गया। धीरे-धीरे उसका चरित्र नष्ट हो गया। एक रात, दो बजे वह घर लौटा। माँ-बाप दोनों ही आग बबूले हो गए। पिता ने गुस्से में कह दिया कि निकल जाओ घर से, तुम आए ही क्यों और माँ ने बच्चे को गुस्से में कह दिया कि मर जाओ। बच्चे से ये शब्द सहन नहीं हुए। उसका उल्टा चिन्तन चला कि पिता घर से निकाल रहा है, माँ कहती है मर जाओ, तो अब मुझे दोनों की आज्ञा का पालन करना है। आत्मा तो कमजोर थी ही। जैसे ही वह अपने कमरे में गया तो देखा कि मच्छर मारने की दवा रखी है। उसने माता-पिता के नाम पत्र लिखा कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ और उसने प्राण त्याग दिए। पता चलने पर माता-पिता को पश्चाताप हुआ कि हमने ऐसे शब्द कहे ही क्यों? पर अब पश्चाताप से क्या लाभ होने वाला था? वास्तव में, वह समय गुस्सा करने का नहीं था, बच्चे की गलती को समाने और शान्त रहने का था। इसके लिए आत्मा का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है। शक्तिशाली बनने के लिए शुभ-भावना, शुभ-कामना रखनी होगी। शुभ-भावना, शुभ-कामना रखने के लिए आत्मस्थिति में रहना होगा और सबको आत्मदृष्टि से देखना होगा। सब आत्माएँ एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं और हर एक में कोई-न-कोई गुण जरूर होगा। चाहे किसी में 100 अवगुण होंगे लेकिन एक गुण अवश्य होगा। क्योंकि आखिर वह भी ईश्वर की सन्तान है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसमें कोई भी गुण नहीं हो। परमात्मा की हम सब संतान हैं। परमात्मा सर्व गुणों का सागर है। उसकी रचना में कोई भी गुण न हो, यह हो नहीं सकता। प्रकृति की हर वस्तु में कोई-न-कोई विशेषता होती है। तो क्यों नहीं हम मनुष्यात्माओं में भी कोई-न-कोई गुण देखें। अवगुण न देखें। दिखाई तो पड़ेंगे अवगुण, ऐसा नहीं कि दिखाई नहीं पड़ेंगे। हम अपनी आँखों को बन्द तो नहीं कर लेंगे। उस समय यही याद रखो कि देखते हुए भी नहीं देखो, सुनते हुए भी न सुनो। **जो चीज़ हमारे काम की नहीं वह सुनते भी न सुनो। अगर कोई मेरा अवगुण वर्णन करता है तो उसको भी मैं अपना परम मित्र मानूँ। क्योंकि कहा जाता है कि निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोए। निन्दक हमें सावधान करता है कि आपके अन्दर यह अवगुण नहीं होना चाहिए। कोई नाहक हमारा अवगुण वर्णन करता हो तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। उस आत्मा पर दया आनी चाहिए। क्योंकि वह व्यक्ति हमें पहचानता नहीं है, जब पहचान जायेगा तो खुद ही चरण छूएगा। यही सोच कर आत्म-चिन्तन करते रहो और उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ते जाओ।**

शाश्वत और सच्ची शान्ति योग-साधना में मिली

ब्रह्माकुमारी हेमलता, सूरत

बात सन् 1970 की है, लौकिक पिताजी ने एक दैनिक पत्र में *'गीता का भगवान कौन'* इस प्रकार का एक विचारोत्तेजक प्रश्न पढ़ा। यह प्रश्न स्थानीय ब्रह्माकुमारी आश्रम की तरफ से पूछा गया था। पिताजी आध्यात्मिक रुचि वाले तो थे ही, इसे पढ़कर सूरत सेवाकेन्द्र पर गए और नियमित ज्ञान सीखने लगे। उन्होंने घर में सभी को ज्ञान सुनाना प्रारम्भ कर दिया। दादा-दादी ज्ञान में आने लगे। मैं भी पहली बार 1979 में 10 वर्ष की आयु में, मधुबन में आई। फिर 12 वर्ष की होने पर भी बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में शामिल हुई परन्तु उस समय तक ज्ञान की सत्यता और वास्तविकता को गहराई तक नहीं समझती थी। धीरे-धीरे मैंने बी.कॉम. की पढ़ाई पूरी कर ली, इसी बीच बड़ी बहन की शादी अमेरिका में हो चुकी थी और उसके ससुराल की तरफ से मेरी शादी का प्रस्ताव भी आने लगा था। मैंने यह कहकर शादी से मना किया कि पहले बी.कॉम. पूरा करूँगी। मैं संसार की स्थितियों से अवगत होती जा रही थी। मैं अपने आस-पास देखे-सुने अनुभवों से इतना समझ गई थी कि आज के समय में एक कन्या को पाँव पर खड़े होने लायक शिक्षा अवश्य ले लेनी चाहिए।

एक दिन दादाजी बीमार हो गए। उनको हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया। पिताजी का मधुबन जाने का कार्यक्रम था। मैंने उनसे कहा कि मैं दादाजी की पूरी सम्भाल करूँगी, आप निश्चिंत होकर यात्रा करने जाइये। दादाजी को देखने बहनें अस्पताल में आई तो मैं उनकी पवित्रता और सौम्यता पर आकर्षित हो उठी। दिल से निकला जीवन हो तो ऐसा। वहाँ मुझे ईश्वरीय साहित्य का अध्ययन करने का भी अच्छा मौका मिला, जिससे बुद्धि विशाल होती चली गई। पढ़ाई पूरी होने का समाचार पाकर अमेरिका से शादी का प्रस्ताव पुन: आ गया परन्तु मेरा झुकाव आश्रम की तरफ बढ़ता जा रहा था। मुझे अनुभव होने लगा था कि जैसे प्रभु की नज़र मुझ आत्मा पर बहुत पहले से है और वे मुझे अपनी तरफ खींच रहे हैं। जिन्होंने शादी का प्रस्ताव किया था वे बहुत अमीर थे, मोटर-गाड़ियाँ और भौतिक सुख-साधनों से सम्पन्न थे, पर मुझे कोई आकर्षण नहीं था। मेरे मन में वैराग्य बस गया था। बचपन में भी फैशन-पिक्चर से लगभग दूर ही रहती थी। मुझे विश्वास था कि साधनों का सुख झूठा और आत्मा को बरगलाने वाला होता है। घर-घर में कलह-क्लेश और अशान्ति के वातावरण को देख मेरा मन सच्ची शान्ति की तलाश में था, जो मुझे योग-साधना में प्राप्त होती थी। इसलिए मैं मन-ही-मन बाल ब्रह्मचारिणी रहने का दृढ़ संकल्प कर चुकी थी। इस लक्ष्य को लेकर अक्टूबर 1989 से नियमित सेवाकेन्द्र पर जाना शुरू कर दिया। निमित्त टीचर ने मुझे कहा कि दो मास अमृतवेले के नियमित योग का चार्ट बनाओ तो मधुबन बाबा से मिलने भेजेंगे परन्तु अभी एक मास ही पूरा हुआ था कि अमेरिका से वह व्यक्ति भारत में शादी करने आ गया। मैं और पिताजी मुम्बई में उसे लेने गए। अगले दिन हमारे घर में उसने चाय-पानी स्वीकार किया और फिर शादी का अपना संकल्प दोहराया। मैंनें लज्जा और संकोच को त्यागकर उन्हें ईश्वरीय सन्देश सुनाया कि **यह समय की माँग है कि अब पवित्र जीवन व्यतीत किया जाए, क्योंकि भगवान**
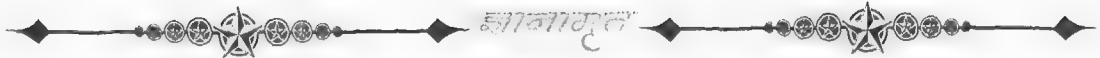
हम आत्माओं से पवित्रता का सहयोग माँग रहे हैं, जो अब पवित्र रहेगा वह आने वाले 21 जन्मों तक दैवी राजभाग का अधिकारी बनेगा। उस व्यक्ति ने मुझे यह कहकर समझाने की कोशिश की कि भविष्य किसने देखा। मैं तो वर्तमान को देखता हूँ और शादी करने का लक्ष्य मेरा पक्का है। इतनी बात होने के बाद मैं गाँव चली गई। फिर लगभग एक माह उसने मेरी 'हाँ' की इन्तज़ार की और 'हाँ' न मिलने पर गाँव की ही एक अन्य कन्या से शादी रचाकर वह अमेरिका चला गया।

पाठकगण में से कई ऐसा सोच सकते हैं कि शादी करके अमेरिका जाना तो सौभाग्य की बात है परन्तु हर चमकने वाली चीज़ सोना नहीं होती। वह व्यक्ति केवल दसवीं पढ़ा था और अमेरिका जैसे देश में कम पढ़े-लिखे लोग होटल में चद्दर बदलने और पाखाने साफ करने की सेवा करते हैं। भले ही पैसा अच्छा मिलता है, परन्तु क्या पैसा ही जीवन का आधार है? अपनी उच्च आकांक्षाएँ, सात्विक जीवन और माटी की सौंधी खुशबू पैसे से कहीं अधिक कीमती हैं। सूरदास ने कहा है - ''या लकुटि अरू कामरिया पर राज तिहुँ पुर को तजि डारों।' सूरदास जी तो श्रीकृष्ण की लकुटि और कामरिया पर तीनों लोकों तक का राज्य बलिहार करने को तैयार थे। परन्तु मुझ आत्मा को श्रीकृष्ण जैसा बनने की आध्यात्मिक राह मिल चुकी थी, उसके आगे हर सांसारिक प्राप्ति तुच्छ नज़र आती है। उसके बाद 14.01.90 को मैं पहली बार अव्यक्त बापदादा से मिली। सूरत के ग्रुप से मिलते हुए प्यारे बापदादा ने महावाक्य उच्चारे - 'जान लिया, मान लिया, अनुभव कर लिया, अच्छे ते अच्छी चीज़ यह है तो क्या अच्छी चीज़ को छोड़ घटिया लेंगे?' प्यारे बाबा के ये महावाक्य मेरे तन-मन पर दृढ़ निश्चय की लकीर बनकर छप गए। मुझे अपने जीवन पर गर्व होने लगा और सेवाकेन्द्र पर लौटकर मैं वहीं रह गई। प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को और अधिक दृढ़ निश्चयवान बनाने के लिए एक बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखाया जो अब भी दिल और दिमाग में तरोताजा है।

अठारह जनवरी स्मृति दिवस पर सांय 4 से 5 बजे के योग के समय एक बहन सन्दली पर योग करा रही थी। मुझे उसके मस्तक पर प्यारे ब्रह्मा बाबा का योग-तपस्या की बैठक वाले स्वरूप का और उनके पीछे खड़े, मुरली हाथ में लिए हुए श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ। कुछ मिनट मैं यह दृश्य देखती रही और गद्गद हो उठी। इसके बाद मुझे दृढ़ निश्चय हो गया कि हम मनुष्य से देवता बन सकते हैं। कृष्ण का ऐसा रूप मैंने तब तक कहीं नहीं देखा था। परन्तु बाद में विद्यालय के विभिन्न चित्रों में वह रूप जब-तब देखने को मिलता रहा। प्यारे बाबा कहते हैं कि मुझे योगी तू आत्मा बच्चे चाहिएँ। बाबा से मिलने वाले सकाश के अनुभव ही हमारे मनोबल को बढ़ाकर सेवाओं में सफलतामूर्त बनाते हैं। बाबा का घर और बाबा का प्यार सर्वोपरि है। इससे अच्छा और इससे ऊँचा कुछ है ही नहीं। मेरी बुद्धि का सारा सम्बन्ध प्यारे बाबा से ही है। कर्मणा सेवा में भी विशेष रूचि रखती हूँ। जीवन से पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। निरन्तर चढ़ती कला का अनुभव करती हूँ।

✦✦✦

बड़ौदा (मंगलवाडी)- अखिल भारत लाडी लोहाणा सिंधी पंचायत, बड़ौदा, पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में शिव संदेश देती हुई ब्रह्माकुमारी राज बहन । साथ में हैं स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज, संचालक, भाजपा के दण्डक भ्राता जीतू भाई सुखडीयाजी तथा अन्य।

माया जीते जगतजीत

ब्रह्माकुमारी श्वेता, चरखी दादरी

(वर्तमान समय बढ़ रहे विकार, बुराई और काले कारनामों का एक ही मुख्य कारण नजर आता है और वह है मानव मन की चंचलता व अस्थिरता। सतयुग-त्रेतायुग में मनुष्य का मन सु-मन था लेकिन 84 जन्मों की सीढ़ियाँ उतरते-उतरते उसका मन कमजोर, अशान्त व अस्थिर हो गया है। आज तो मानव का मन पारे की तरह हो गया है, जितना ही इसे पकड़ने की कोशिश करते हैं, यह फिसलता ही जाता है। कितने ही साधु-संन्यासियों ने मन को शान्त करने के लिए दमन का रास्ता अपनाया पर सफलता नहीं मिली। कहा गया है कि अगर मन को जीत लिया जाए तो जगत को जीतना कोई मुश्किल नहीं। वर्तमान समय राजयोग के द्वारा अनेक ब्रह्मा-वत्सों ने माया (पाँच विकार) पर विजय पाकर जगतजीत बनने के पथ पर अपने कदम सफलतापूर्वक बढ़ाए हैं। राजाओं के व्यसन या विकार में रत होने के कारण किस प्रकार उनके हाथ से राज्य चला गया, ऐसे उदाहरण इतिहास में बहुत मिलते हैं। प्रस्तुत लघु नाटिका में भी आत्मा रूपी राजा के कमजोर होने पर कर्मेन्द्रियों द्वारा की जाने वाली मनमानी से जीवन का समस्याग्रस्त और दु:खी होना दिखाया गया है। नाटिका में एक ही व्यक्ति की अलग-अलग इन्द्रियों और सूक्ष्म शक्तियों को एक-एक पात्र का दर्जा दे दिया गया है परन्तु व्यवहार में तो यह एक ही व्यक्ति पर गुजरने वाली घटना है।)

पात्र परिचय -

आत्मा देव – राजा
बुद्धि देवी – रानी
मन – पुत्र
नयन – मुख्यमंत्री
संस्कारिता – पुत्रवधू
कर्ण देव – सलाहकार
मुखवीर – सेनापति
हस्तदस्ता – सैनिक दस्ता
नासिका – दासी

(आत्मा देव अपने भृकुटी राजसिंहासन पर अपनी रानी बुद्धि देवी के साथ विराजमान हैं, मुख्यमंत्री नयन उन्हें राज-कार्य का ब्यौरा दे रहे हैं। तभी सेनापति मुखवीर दौड़ा-दौड़ा आता है।)

मुखवीर - *(मन ने दूसरे व्यक्ति के साथ झगड़ा किया है इससे नाक पर चोट आई है, उसका समाचार राजा को सुनाता है।)*

महाराज, लेकर साथ सैनिकों को, राजकुमार कर बैठा है चढ़ाई,
जो है सरहद पराई, इसमें दासी को बहुत चोटें हैं आई।

आत्मा देव - क्या राजकुमार की यह मजाल, बिन कारण चढ़ाई का नहीं कोई सवाल, बुलाओ सैनिकों को, क्यों मचाया यह बवाल

(हस्तदस्ता हाजिर हो जाता है)

आत्मा देव ***(सैनिकों से)*** - तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई ?

सैनिक - महाराज, हमारा कुछ नहीं, सब राजकुमार ने कराया था। उसने ही हुक्म देकर, हम सबको वहाँ बुलाया था।।

आत्मा देव - मन को बुलाया जाए।

(मन का प्रवेश, अस्त-व्यस्त हालत में, कपड़े फटे हुए, लगातार हिल रहा है।)

आत्मा देव ***(मन से)*** - मन, दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं तुम्हारी नादानियाँ, हमारे सुखी राज्य के लिए ले आई हैं परेशानियाँ।

मन - पिताजी, खुद को वश में नहीं कर पाता हूँ, कुछ-ना-कुछ करने को हरदम ललचाता हूँ।

आत्मा देव - तुम्हारी नादानी से निर्दोष प्रजा तंग आई है, कुछ खबर है तुम्हें, दासी को बहुत चोटें आई हैं।

मन - महाराज, जब कर रहा था मैं चढ़ाई, वो बीच में क्यों आई, इसी कारण हो गई उसकी धुनाई।

(राजा सिर पर हाथ रख कर बैठ जाता है। चूँकि बुद्धि लगाम और मन घोड़े के समान है इसलिए राजा,

रानी को दोष देता है कि तुमने लगाम क्यों नहीं खींच कर रखी।)

आत्मा देव ***(बुद्धि देवी से)*** - तुमने अगर रखा होता पहले से नियंत्रण, ना देता आज ये परेशानियों को आमंत्रण। तुम्हारे लाड-प्यार ने ही इसे सिर पर चढ़ाया है, इतने दिनों तक आखिर तुमने इसे क्या सिखाया है ।

बुद्धि देवी - मैं तो इसे बहुत समझाती, डाँट-फटकार लगाती हूँ, पर हर बार वो मुझे ही बहला-फुसला जाता है, पुत्र-मोह के बँधन में बाँध कर निकल जाता है।

आत्मा देव - पुत्रवधू को बुलाया जाए।

(चूँकि मन सोचता है, फिर कर्म होते हैं, उसी अनुसार संस्कार बनते हैं इसलिए संस्कारों को मन का और मन को संस्कारों का अनुगामी माना जाता है। मन की अनुगामी संस्कारिता रूपी पत्नी सिर झुकाए, घुँघट निकाले हुए हाजिर होती है।)

आत्मा देव ***(संस्कारिता से)*** - पति को सही राह दिखाना, है पत्नी का प्रथम धर्म, कमजोर नहीं शक्तिशाली बन, कर तू अपना ये कर्म।

संस्कारिता - पिताजी, मेरे लिए तो पति ही परमेश्वर है, उनके बनाए विधान ही मेरे जीवन का अंग हैं।

(राजा हताश, निराश होकर सिंहासन से उठ जाता है और बेचैनी से टहलने लगता है। थोड़ी देर बाद एक विचार उसके मन में कौंधता है और वह सैनिकों को आदेश देता है।)

आत्मा देव - सैनिको, सारे राज्य में मुनादी करा दो कि जो राजकुमार को सुधारेगा उसे बड़ा इनाम मिलेगा।

(मुनादी वाला सारे राज्य में घूम-घूम कर मुनादी कर रहा है।)

मुनादी वाला - मुनादी सुनो गौर से, पीछे बात करो किसी और से, मुनादी वाला आया है, बड़ा संदेशा लाया है। राजा का पुत्र है बड़ा चंचल, नाम रखा है उसका कु-मन, उसको सुधारे जो भी जन, पाएगा वो अपार धन।

(एक साधु राज-दरबार में आता है, गेरुए वस्त्र, गले में माला, हाथ में कमण्डल व चिमटा, सिर से कंधे तक बिखरी हुई जटाएँ।)

साधु ***(आत्मा देव से)*** - राजन, एक मास भेज दो इसे मेरे साथ, रहेगा जब दूर घर-परिवार से, हो जाएगा शान्त, पक्का साधु बन जाएगा, करेगा ना आपको परेशान।

(राजा, साधु के साथ राजकुमार को भेज देता है परन्तु मात्र 10 दिन बाद ही साधु, मन को वापस ले आता है। मन पूर्ववत् हिल रहा है।)

साधु ***(आत्मा देव से)*** - महाराज, रखिए अपने पुत्र को अपने ही पास, मुझे नहीं दिखती इसके सुधरने की आस। कितना इसे समझाया, भगवान की तरफ लगाया, पर कुछ फायदा नहीं, अंत में मुझे ही भगा लाया।।

(आत्मा देव फिर से निराश होकर बैठ जाता है। तभी थोड़ी देर में एक हठयोगी का प्रवेश होता है, दुबली-पतली काया, बढ़े हुए रूखे-सूखे बाल, निर्जीव पीला चेहरा, तनी हुई भौंहें, चेहरे पर क्रोध के भाव।)

हठयोगी ***(आत्मा देव से)*** - महाराज, मैं बताता हूँ समस्या का समाधान, बंद कर दो इसका सारा खान-पान। एक दिन उल्टा लटकाओ, दूसरे दिन एक टाँग पर खड़ा कराओ। दो दिन में ठीक हो जाएगा, फिर नहीं आपको सताएगा।

(आत्मा देव हठयोगी के बताए अनुसार 1 दिन मन को उल्टा लटकाता है, दूसरे सारे दिन उसे एक टाँग पर खड़ा रखता है, उसका खान-पान बंद कर देता है। लेकिन 2 दिन बाद मन की वही चंचलता शुरू हो जाती है। पहले से भी द्रुतगति से हिलने लगता है।)

आत्मा देव - *(ऊपर की ओर देखते हुए)* हे भगवान, अब तू ही मालिक है।

(तभी ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवेश होता है, सफेद वस्त्र, चेहरे पर दिव्यता व शान्ति की किरणें हैं। पूरे राजदरबार को शान्ति से ओत-प्रोत कर देती हैं, हंस की-सी चाल से चलती हुई राजा आत्मा देव के सामने जाती हैं। आत्मा देव अभिवादन में खड़ा हो जाता है।)

ब्रह्माकुमारी बहन *(आत्मा देव से)* मन का दमन नहीं, मन को है सुमन बनाना, शुभ विचारों का खजाना देना, अच्छे कार्यों में लगाना। परिवर्तन की एक को नहीं, है सभी को आवश्यकता, तभी मन सुधर पाएगा, मिट जाएगी सब चिंता। अपने को ना हीन मानो, अपने मूल गुणों को पहचानो। पाँच विकारों को छोड़ो, पवित्रता अपनाओ, परमात्मा को जान, उनसे योग लगाओ।

(बुद्धि देवी से) पुत्र मोह से अपने को कर लो आजाद, तभी रहेगा तुम्हारा अंकुश, मानेगा पुत्र तुम्हारी बात।

(संस्कारिता से) अपने पैतृक गुणों *(आदि-अनादि संस्कार)* को जगाओ, दिव्य गुणों के गहनों से पति को सजाओ।

(मन से) तुम्हें नहीं छोड़ना खेलना-कूदना, नाचना-गाना, बस जरा से परिवर्तन को ही है अपनाना।

प्रभु मस्ती में झूलो-नाचो-गाओ, ज्ञान की गहराइयों में डूबकी लगाओ। उड़ना है तो ज्ञान-योग के पंख लगाओ, सबको परमधाम की सैर कराओ। लड़ाई करनी है तो व्यर्थ संकल्पों से करो, जो हैं राज्य के दुश्मन उनके आगे तुम तनो। अगर नहीं चला परमात्म श्रीमत पर तो तू पछताएगा, रहा हुआ राज्य भी तेरे हाथ से जाएगा।

(ब्रह्माकुमारी बहनें सबको राजयोग का अभ्यास करने का इशारा देती हैं। सभी स्थिर हो जाते हैं।)

ब्रह्माकुमारी बहन *(कॉमेन्ट्री कराते हुए)* मैं एक आत्मा हूँ... एक चेतन शक्ति हूँ ... मैं प्रकाशस्वरूप हूँ ... एक तारे की भाँति जगमगाती ज्योति हूँ... मैं वास्तव में शान्तिस्वरूप हूँ और आदि स्वरूप में पवित्र हूँ ... मैं अजर ... अमर और अविनाशी हूँ ... मैं पाँच तत्वों की देह से और प्रकृति के जगत् से न्यारी हूँ और कर्मातीत हूँ... मैं वास्तव में सूर्य, चाँद और तारागण से भी पार, ज्योति के देश अर्थात् परमधाम से ही इस सृष्टि में आई हूँ और अब वहाँ ही मुझे जाना है ... मैंने जन्म-जन्मान्तर यहाँ अनेक नाम-रूप वाले शरीर लेकर पार्ट बजाया परन्तु अब तो पुन: मुझे उस ज्योति-देश में लौटना है... अहा, पाँच तत्वों से पार, इस धाम में सर्वत्र शान्ति है ... पवित्रता है ... प्रकाश है ... निस्संकल्पता है... मैं भी वास्तव में देह से भिन्न, अपने आदि स्वरूप में कर्मातीत हूँ और एक ज्योति-कण ही हूँ... शान्त हूँ ... शुद्ध हूँ ... एक शक्ति हूँ... प्रकाश बिन्दु हूँ ...

(मन का हिलना क्रमश: धीरे-धीरे कम होता जाता है। शान्ति का प्रवाह वातावरण में फैलने लगता है। राजा को जैसे आशा का सूर्य उदय होता नजर आता है। उसकी चिन्ता की रेखाएँ उल्लास भरी मुस्कराहट में बदल जाती हैं। बहनें प्रस्थान करती हैं।)

❖❖

बालोतरा – सर्व धर्म सम्मेलन में पधारे महन्त औंकार भारती, महामण्डलेश्वर निर्मल दास जी महाराज, जैन मुनि राजकरण जी, ब्रह्माकुमार रामनाथ भाई, ब्रह्माकुमारी रंजू बहन तथा अन्य ।

स्मृति से समर्थी

ब्रह्माकुमार सुधीर, भवानीपाटना (उड़ीसा)

स्वमान और स्वधर्म की स्मृति से मानव में समर्थी अर्थात् शक्ति का संचार होता है। कहा जाता है - 'यद् ध्यायति, तद् भवति' अर्थात् जैसा मानव स्मरण करता है वैसा ही बन जाता है। परमात्मा पिता भी ब्रह्मा बाबा के साकार तन में अवतरित होकर सृष्टि को स्वर्ग बनाने के लिए इसी स्मृति रूपी जादुई छड़ी का इस्तेमाल कराते हैं। वे आत्माओं को स्मरण कराते हैं कि सतयुग-त्रेतायुग में तुम मायाजीत, कर्मेन्द्रियजीत और जगतजीत थे। अब उस स्वरूप को, उस स्थिति को, उस समय के अपने जीवन को बार-बार स्मृति में लाओ तो तुम पुनः मायाजीत बन जाओगे। परमात्मा पिता की इस युक्ति से प्रतिदिन लाखों आत्माएँ माया की दलदल से निकल, बुराइयों को पछाड़ती हुई विजयश्री को वरण कर रही हैं। इसी सम्बन्ध में एक बूढ़े हाथी की कहानी बड़ी प्रेरणादाई है –

एक राजा के पास एक बहादुर हाथी था जिसकी एक हुँकार से सारा रणक्षेत्र हिल उठता था। वह पलक झपकते ही शत्रुपक्ष को बाँध लेता था जिस कारण राजा ने उसका नाम वद्धेरक रखा था। समय के साथ-साथ वह वृद्ध अवस्था को प्राप्त होने लगा, काया कमजोर पड़ने लगी। एक दिन वह तालाब पर नहाने गया और कीचड़ में उसका पाँव फँस गया। लाख कोशिश करने पर भी वह कीचड़ से निकल नहीं पाया। राजा ने सैनिकों को भेजा तो उन्होंने हाथी की दयनीय दशा देखी और राजा को बयान कर दी। समग्र नगरी में यह बात फैल गई, सभी हाथी को देखने के लिए दौड़ पड़े। राज्य के सभी हाथी मिल कर भी वद्धेरक को कीचड़ से बाहर निकालने में असमर्थ साबित हुए। आखिरकार सोचते-सोचते राजा को हाथी के सेवानिवृत्त महंत (हाथी को नियन्त्रित करने वाला) की याद आई। महंत आया और अपने पराक्रमी हाथी की यह दशा देख कर काँप उठा। उसे एक उपाय सूझा। उसने राजा को युद्ध-भेरी और युद्ध-वाद्य बजाने का इन्तजाम करने की सलाह दी। युद्ध-भेरी बजने लगी। वद्धेरक की सम्पूर्ण जवानी युद्धक्षेत्र में पराक्रम दिखाने में बीती थी। युद्ध-भेरी सुनते ही उसे अपना विजयी अतीत याद आ गया। उसका खून गर्म होने लगा। मुँह पर तेज और बल प्रवाह प्रकट होने लगा। वह अपना सम्पूर्ण बल लगा कर बिना किसी सहारे के कीचड़ से बाहर निकल आया और हुँकार भरते हुए नगरी में प्रवेश कर गया। उसका जोरदार स्वागत हुआ।

प्यारा बाबा भी हमें स्मृति स्वरूप होकर रहने की आज्ञा देते हैं। यह स्मृति ही हमारा कवच है, ढाल है, लक्ष्मण रेखा है जिसके अन्दर कोई भी मायावी वृत्ति प्रवेश नहीं कर सकती। घर परमधाम की स्मृति, प्यारे बाबा की स्मृति, सतयुग की स्मृति, लक्ष्य की स्मृति, अपने लक्षणों की स्मृति – इनको हर समय मन-बुद्धि में सम्भाल कर रखने से सदा सुरक्षित, विजयी, सफल और खुशनसीब बन जायेंगे। श्रेष्ठ विचारों का प्रवाह मन में सदा बना रहेगा। श्रेष्ठ विचार ही इस दिव्य जन्म रूपी पौधे का पानी हैं। कुम्भकर्ण को जगाने के लिए जिस प्रकार ढोल बजाने की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार **परमात्मा शिव भी दिव्य स्मृतियों का उद्घोष प्रतिदिन की मुरली में करते हैं। ये श्रेष्ठ स्मृतियाँ ही हमें देवता बनाती हैं और विकारों की पंक से निकाल दिव्यता को अंक में भरने की शक्ति प्रदान करती हैं।**

✦✦✦

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें देना और दुआयें लेना

बांग्लादेश में आध्यात्मिकता की लहर

ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

भारत के पूर्व में स्थित छोटे से बांग्लादेश में राजकीय मान्यता से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा बेहतर विश्व अकादमी (एकेडमी फॉर ए बैटर वर्ल्ड) सन् 2000 में आरम्भ की जा चुकी है। जुलाई, 2004 में ईश्वरीय सेवार्थ मेरा वहाँ जाना हुआ। वहाँ मुझे बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगा कि मैं किसी दूसरे देश में आया हुआ हूँ। वहाँ के लोगों के रीति-रिवाज, खान-पान आदि काफी कुछ भारत से ही मिलते-जुलते हैं। मैं जहाँ-जहाँ भी गया लोगों ने भव्य स्वागत किया, जोकि उस देश की सम्पन्न विरासत को परिलक्षित करता है। वहाँ विश्व प्रसिद्ध ढाका विश्वविद्यालय में और एकेडमी फॉर ए बैटर वर्ल्ड में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें बुद्धिजीवी वर्ग ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तरों के लिए कुछ समय रखा जाता था। कुछ प्रश्न प्रस्तुत हैं –

प्रश्न : क्या राजयोग किसी धर्म विशेष पर आधारित है?

उत्तर : नहीं। राजयोग किसी धर्म विशेष पर आधारित नहीं है। राजयोग की शिक्षायें समूची मानवता के लिए हैं। इसलिए ही हमारे विश्व विद्यालय की शाखाएँ संसार के 90 से भी अधिक देशों में स्थित हैं, जहाँ प्रत्येक धर्म, भाषा आदि के लोग राजयोग की शिक्षाओं से लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रश्न : प्रतिदिन राजयोग अभ्यास करने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर : जैसे शरीर को चलाने के लिए प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है, ठीक वैसे ही आत्मा (नूर) को चलाने के लिए भी भोजन की ज़रूरत होती है। आत्मा रूपी बैटरी को राजयोग के द्वारा चार्ज किया जा सकता है। प्रतिदिन का योगाभ्यास हमें स्फूर्ति से भर देता है जिससे कार्यक्षमता कई गुणा बढ़ जाती है। जैसे आप लोग (मुस्लिम) प्रात:काल उठकर नमाज़ पढ़ते हैं, इसी प्रकार हम लोग भी ब्रह्ममुहूर्त में निराकार परमात्मा को प्रेम से याद करते हैं। इसी विधि को अध्यात्म में राजयोग की संज्ञा दी गई है। आपके यहाँ पाँच वक्त प्रार्थना (नमाज़) है, ठीक इसी प्रकार राजयोग के अभ्यासी भी दिन के समय पाँच बार ट्रैफिक कण्ट्रोल (संकल्पों को नियंत्रित करके परमात्म-याद) करते हैं। ऐसा करने से शक्ति प्राप्त होती है और दिन सुव्यवस्थित और संयमित व्यतीत होता है।

बांग्लादेश (ढाका) - ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश जी, तनाव मुक्त जीवन पर प्रवचन करने के बाद नेशनल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति भ्राता दुर्गादास भट्टाचार्य जी, ब्र.कु. कविता बहन, ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य के साथ समूह चित्र में ।

प्रश्न : क्या मुसलमान भी अकादमी (ब्रह्माकुमारी संस्था) की सदस्यता के पात्र हो सकते हैं?

उत्तर : हाँ। भारत तथा विदेशों में कई स्थानों पर मुसलमान भाई-बहनें नियमित क्लास आदि करते हैं। जैसे दो और दो को जोड़ने पर भारत, अमरीका और बांग्ला देश में उत्तर चार ही आयेगा। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिकता सम्पूर्ण मानव जाति का एक समान विकास करती है। आध्यात्मिकता को अपनाने से हम प्रबुद्ध और जागरूक नागरिक बन जाते हैं और स्वयं को उन्नति के सर्वोच्च शिखर तक ले जा सकते हैं।

प्रश्न : क्या राजयोग का अभ्यास कार्य-व्यवहार में रहते हुए किया जा सकता है?

उत्तर : राजयोग का एक दूसरा नाम कर्मयोग भी है जिसका शाब्दिक अर्थ है कर्म करते हुए राजयोग का अभ्यास। यह अनुभव सम्मत है कि कोई भी व्यक्ति एक बार राजयोग का प्रशिक्षण प्राप्त कर ले तो वह भोजन करते हुए, यात्रा करते हुए, कार्यालय में कार्य करते हुए या अन्य कोई भी कर्त्तव्य निभाते हुए भी राजयोग का अभ्यास कर सकता है।

प्रश्न : आपकी अकादमी का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

उत्तर : हमारी अकादमी का प्रमुख उद्देश्य मानव को श्रेष्ठ और सम्पूर्ण बनाना है। हमारी संस्था वैश्विक भेदभाव को दूर करके एक नवविश्व के निर्माण में जुटी है। अकादमी का मूलमंत्र एक सम्पन्न, समृद्ध और श्रेष्ठ विश्व की स्थापना करना है।

प्रश्न : आधुनिक युवाओं के लिए राजयोग की शिक्षा कैसे लाभप्रद हो सकती है?

उत्तर : आज का युवा दिग्भ्रमित हो गया है। उसे सही राह नहीं सूझ रही है। ऐसे अंधकार में हमारी संस्था युवाओं के लिए विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम आयोजित करती है जो राजयोग पर ही आधारित होते हैं। हम विभिन्न देशों में मूल्यनिष्ठ शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर भी कार्य कर रहे हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग एक लाख युवा भाई-बहनें इस विश्वव्यापी संस्थान से जुड़े हुए हैं जोकि मद्यपान, धूम्रपान, गुटखा आदि के सेवन से पूर्णरूपेण मुक्त हैं।

प्रश्न : वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं जैसे भूख, भय, भ्रष्टाचार और आतंकवाद को समाप्त करने में आपकी अकादमी क्या सहयोग दे रही है?

उत्तर : हमारी अकादमी मानव को उसके खोए हुए मूल्यों और शक्तियों का ज्ञान देती है। एक मानव का दूसरे मानव के साथ भाई-भाई का सम्बन्ध है, यह अकादमी की सर्वाधिक प्रमुख शिक्षा है। मानवता का वरण कर लेने पर भूख, भय, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी विश्वव्यापी समस्याओं का सहज ही समाधान हो जाता है। मानव क्रियाशील हो जाता है तथा दूसरों के साथ सदैव ही इंसानियत का व्यवहार करता है।

प्रश्न : आज के शिक्षित परिवारों में कलह-क्लेश को दूर करने और आपसी सामंजस्य स्थापित करने के लिए आप क्या सुझाव देंगे?

उत्तर : आज के परिवारों में कलह का प्रमुख कारण अहम् और वहम की भावना है। पति कहता है कि मैं बड़ा और पत्नी कहती है कि मैं भी कमाती हूँ, इसलिए मेरा भी स्थान कम नहीं है। राजयोग का अभ्यास करने से हमारे अंदर धैर्य और शान्ति जैसे गुणों का प्रादुर्भाव होता है जिससे अहम्-वहम की भावना स्वतः ही नष्ट हो जाती है, फलतः एक-दूसरे के प्रति विश्वास की भावना जाग्रत हो जाती है। आपसी विश्वास होने से लड़ाई-झगड़े की सम्भावनायें समाप्त हो जाती हैं और हम शान्ति के साथ जीना सीख लेते हैं।

OO

साधक के लिए बाधक है विलम्ब का संस्कार

ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

आलस्य मनुष्य का महावैरी है। वास्तव में समस्त दुर्गुणों के मूल में यह मनोविकार आस्तीन के साँप की तरह है। इससे न केवल छोटे-मोटे नुकसान होते हैं बल्कि यह दूरगामी प्रभाव डालता है जो जीवन की दशा व दिशा को ही बिगाड़ देता है। आलस्य के वंशजों में विलम्ब (देर करने) का संस्कार पितामह की तरह है। हर कार्य को विलम्ब से करने का परिणाम आत्मघाती है।

विलम्ब से आपने विद्यालय में प्रवेश लिया, विलम्ब से पढ़ाई शुरू की, परीक्षा-कक्ष में विलम्ब से पहुँचे, इलाज करने में विलम्ब किया, विलम्ब से स्टेशन पर पहुँचे, विलम्ब से अपने कार्यालय पहुँचे – ऐसे ही कहीं ऐसा न हो कि भगवान भाग्य बाँट रहा हो और आप विलम्ब से पहुँचें। ज़रा सोचें तो परिणाम?

लेट लतीफी के मामले में भारतीय वैसे भी विश्व विख्यात हैं। 'इन्डियन टाइम' कह कर हमारा मखौल उड़ाया जाता है जो बिल्कुल ही हमारी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। किन्तु आराम से करने के हम शौकीन हो चुके हैं इस पर भी आराम को हम सुस्ती व विलम्ब नहीं मानते बल्कि और ही इसे धीरज व सन्तोष की श्रेणी में समझते हैं। यही है वह विलम्ब का संस्कार जो हमारी नस-नस में रच-बस गया है। सांसारिक दृष्टि से विलम्ब से होने वाली क्षति की पूर्ति चाहे सम्भव व स्वीकार्य हो किन्तु आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले साधक के लिए यह अत्यन्त हानिकारक है।

अमृतवेला, साधना की दृष्टि से दिनचर्या का स्वर्णिम समय होता है जब शान्तचित्त से एकाग्र होकर ईश्वर-ध्यान, आत्म-चिन्तन एवं विश्व-कल्याण के प्रकम्पन (vibration) द्वारा आध्यात्मिक लाभ लिया जा सकता है। सारी दिनचर्या को एक सुदृढ़ आधार देने एवं स्वस्थिति शक्तिशाली बनाये रखने के लिए आवश्यक शक्ति अर्जित करने का यही तो समय होता है किन्तु इस समय को भी यदि आलस्य, निद्रा व प्रमादवश गँवा दिया जाता हो तो साधक की गति-प्रगति में बाधा तो होगी ही।

ऐसे ही अनेक अवसर आते हैं जब हम चिन्तन-मनन, अध्ययन, शोध, सेवा एवं परोपकार कर सकते हैं किन्तु दृढ़ता सम्पन्न लक्ष्य के बिना यूँ ही समय को जाने देते हैं। किसी विद्वान ने सही कहा है – "संसार में ऐसा व्यक्ति कोई नहीं जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो परन्तु जब भाग्य देखता है कि व्यक्ति उसका स्वागत करने को तैयार नहीं हैं तो वह उल्टे पैरों लौट जाता है।"

मनुष्य जीवन बड़ा अनमोल है, इस जीवन का एक-एक क्षण बेशकीमती है जिसकी तुलना किसी पदार्थ से की नहीं जा सकती। वैसे तो पदार्थ किसी कीमत पर पुन: प्राप्त किए भी जा सकते हैं किन्तु बीता समय तो फिर हाथ नहीं आता। वर्तमान हमारे हाथ में है लेकिन व्यतीत हुए पल अतीत में सदैव के लिए समा जाते हैं। विलम्ब के संस्कार वाले इतने अलबेले होते हैं कि उन्हें जीवन और समय के महत्त्व की कोई परवाह नहीं होती। जिसने समय के महत्त्व को समझा नहीं है वह उसे सफल भी कैसे करेगा। लापरवाही से, अनमोल जीवन के हीरे जैसे पलों को व्यर्थ में लुटाने वाला नि:संदेह कोई अभागा एवं मूढ़मति ही होगा। दरअसल हमें तो होना चाहिए बेपरवाह (carefree) लेकिन हो जाते हैं लापरवाह (careless)।

यह जानते हुए भी कि 'समय एवं सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करते (Time and tide wait for none), गया वक्त फिर हाथ

नहीं आता तथा देर करना घातक होता है (Delay is dangerous)' समय को जाते हुए देखते रहते हैं। सफल करने की सोचते भी रहते हैं किन्तु समय की सफलता व जीवन की सार्थकता की कला से चूक जाते हैं। फिर समय बीत जाने पर विस्मय ही हाथ लगता है। आह! ऐसा कैसे हो गया? इसको ही पश्चाताप कहते हैं।

हमारे पास विलम्ब के अनेक बहाने हैं जबकि वास्तविकता तो यह है कि हमें समय का पालन (Punctuality), नियमितता (Regularity), यथार्थता (Accuracy), नियम-अनुशासन जैसे गुणों का कोई ध्यान नहीं है। ये मूल्य हमारे लिए तो निर्मूल्य ही हैं। जब तक हमें इन बातों का ज्ञान एवं ध्यान न होगा तब तक विलम्ब के संस्कार पर विजय पाने के मंसूबे यूँ ही धरे रह जायेंगे। इसे हमने संस्कार इसलिए कहा है कि यह आदत हमारे आचार-विचार में गहराई तक पैठ कर गई है। बचपन से ही हमारी सोच, हमारा नजरिया विलम्ब करने का, देर भली का, स्थगन का (postpone), टालमटोल का बन गया है। 'हो जायेगा', 'कर लेंगे', 'ऐसी भी क्या जल्दी है' जैसे तकिया-कलाम आराम की तकिया का काम करते हैं। इसे ही प्रमाद (negligence) कहा जाता है। अगर दूर तक देखा जाय तो यह संस्कार हमारे आहार-विहार-व्यवहार की बिगड़ती व्यवस्था का मूल कारण है और जब ऐसी धारणा हमारी सामाजिक सोच का हिस्सा बन जाये तो यह समस्या व्यक्तिगत न होकर विश्वव्यापी रूप ग्रहण कर लेती है।

विलम्ब के संस्कार-परिवर्तन से हमारा तात्पर्य उन कार्यों को करने से है जिन्हें हम निर्धारित समय व लक्ष्य के प्रमाण सम्पादित नहीं करते हैं, जिन्हें करके भी हमें आत्मिक सन्तोष नहीं प्राप्त होता है, मन कचोटता है कि हमें समय पर इसे कर लेना चाहिए था। परिणामत: खीज भी पैदा होती है और पश्चाताप भी। किन्तु विलम्ब के संस्कार परिवर्तन का मतलब यह भी नहीं कि आप हर कार्य जल्दबाजी में, बिना सोचे-समझे, कर्म कॉन्शियस, टाइम कॉन्शियस होकर करें। इससे तो जीवन की सहजता समाप्त हो जाएगी। कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें स्थगित करने में ही भला है जैसे कई बुरी आदतें हैं उन्हें टालते ही रहना चाहिए जबकि अच्छे कार्य को टालते रहना, करने में विलम्ब करना अच्छा नहीं है। कहा भी जाता है - "शुभम् तु शीघ्रत:" शुभ कार्य में देरी क्यों?

अब प्रश्न उठता है कि क्या इस संस्कार का परिवर्तन सम्भव नहीं है। यदि हाँ तो इस आदत को कैसे मिटाएँ? तो आइये समझ लें –

आलस्य, अलबेलापन व विलम्ब के संस्कार से मुक्ति की युक्ति - किसी भी संस्कार व आदत से मुक्ति के लिए चाहिए महसूसता की शक्ति (Realisation Power)। समय को खोना माना श्रेष्ठ जीवन, तीव्र पुरुषार्थ एवं जन्म-जन्म के भाग्य से खिलवाड़ करना। इस बात को जितनी गम्भीरतापूर्वक (Seriously) स्वीकार करेंगे उतनी ही तीव्रगति से परिवर्तन सम्भव होगा।

मनोबल, दृढ़ता एवं कटिबद्धता - कहते हैं कि आदत की दवा नहीं। फिर भी निरन्तर अभ्यास एवं दृढ़ इच्छाशक्ति (Will Power) से असम्भव से दिखते कार्यों को भी सम्भव किया जा सकता है।

सावधानी (Attention), निरीक्षण (Checking) एवं परिवर्तन (Change) – सजग प्रहरी की तरह अपनी गतिविधियों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है क्योंकि सावधानी बरते बिना संकल्प, वाणी एवं कर्म, संस्कारों के शिकार हो सकते हैं। पुरानी आदतें धोखा दे सकती हैं, अत: सतर्क रहें। साथ-साथ जाँच करें कि किन कारणों से सुस्ती आलस्य व अलबेलापन है। इसके लिए स्थूल व सूक्ष्म कार्यों की अल्पकालीन व दीर्घकालीन

योजनाओं की सूची तैयार कर लें। उसमें भी प्राथमिकता के हिसाब से कार्य तय करें। **जहाँ तक हो सके कार्यों को शीघ्र निबटाने का प्रयास हो, आज का काम आज ही करें। भारी कामों को 2-3 हिस्सों में बाँट लें तो आसानी होगी। ध्यान रहे, जल्दबाजी में कोई काम न हो, न ही गुणवत्ता (Quality) से समझौता करें। शुरू किए गए कार्य को यथासम्भव पूरा करने की कोशिश करें। अपनी खामियों की जाँच करके फिर उन्हें दूर करने व स्वयं की कमजोर मानसिकता के परिवर्तन का प्रयास करते रहें।**

सुनियोजित एवं व्यवस्थित दिनचर्या- विलम्ब से शुरू की गई दिनचर्या में हर बात विलम्ब से होती है। देर रात तक जागने, टी.वी. आदि देखने और तनावों-चिन्ताओं व कार्य के बोझ से उत्पन्न अनिद्रा के कारण भी ऐसी परिस्थिति निर्मित हो जाती है। यदि थोड़ा पहले उठने की आदत बनायें और सुबह तय कर लें कि क्या काम निबटाने हैं तो बहुत हद तक आप समय पर काम पूरा हुआ पायेंगे, साथ-साथ चुस्त-दुरुस्त एवं खुशहाल भी रह पायेंगे।

इच्छाओं को नियन्त्रित व आवश्यकताओं को सीमित करें - अगणित इच्छाओं व महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के चलते व्यक्ति जीवन की चक्करघिन्नी में फिरता रहता है। इच्छाओं-आवश्यकताओं के बीच कोई मध्य रेखा न होने के कारण आवश्यक-अनावश्यक कार्यों की अन्तहीन पंक्ति खड़ी रहती है। इससे निश्चित ही दिनचर्या बोझिल और उबाऊ हो जाती है। इच्छाएँ कम करें, समस्याएँ स्वत: कम हो जायेंगी। किन्तु इच्छाओं को नियन्त्रित करना व आवश्यकताओं को सीमित कर पाना इतना सहज नहीं, वह भी इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में। इसके लिए चाहिए मन का आध्यात्मिक सशक्तिकरण। मनोबल वृद्धि, निर्णयशक्ति एवं सहज सफलता की सिद्धि के लिए राजयोग सर्वोत्तम विकल्प है।

निश्चित लक्ष्य एवं पक्का इरादा तथा सोचें कम, करें ज्यादा - जीवन एवं कार्य का लक्ष्य निश्चित न होने से एकाग्रता, दृढ़ता तथा सफलता संदिग्ध हो जाती है। मनोस्थिति भी बदलती रहती है और मनोदशा (Mood) बिगड़ जाती है। कइयों की आदत है कि वे सोचते बहुत हैं - क्या बनाऊँ, क्या खाऊँ, क्या पहनूँ .... इसमें ही वक्त जाया करते हैं।

'अभी नहीं तो कभी नहीं (Now or never)' शुभ कार्य के लिए यह सोच बहुत आवश्यक है। वास्तविकता है कि करना है जो भी कर लें, वक्त जा रहा है। हर घड़ी हमारी अन्तिम है, कौन-सा पल काल का पैगाम ले आए - इसलिए हम अपनी आख़िरी साँसें भी ईश्वरीय स्मृति व विदेही स्थिति में रहते शान्ति एवं सन्तोष से लें, इस पुरुषार्थ में अविलम्ब लगना चाहिए। कम-से-कम विलम्ब के संस्कार को समाप्त करने के लिए अब हमें किंचित भी विलम्ब व प्रमाद नहीं करना चाहिए।

◆◆◆

फर्रुखाबाद- सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम में शिव संदेश देती हुई ब्रह्माकुमारी नीलू बहन। साथ में हैं केन्द्र संचालिका ब्रह्माकुमारी लता बहन तथा अन्य।

गुरु-शिष्य परम्परा की लाज रखिये

ब्रह्माकुमार दिनेश, आनन्दपुरी (हाथरस)

आश्चर्य और दु:ख होता है यह जान कर कि श्रेष्ठ परम्पराएँ कलियुग के प्रभाव में आकर दम तोड़ती जा रही हैं। अमुक शिक्षक ने छात्रा के साथ काम विकार के वशीभूत दुर्व्यवहार किया, अपहरण किया; छात्रों द्वारा शिक्षिका के साथ शारीरिक दुर्व्यवहार किया गया। इस प्रकार के कुकृत्यों के वर्णन से तो शर्म को भी एक बार शर्म आ जाए। एक वह भी समय था जब एकलव्य ने गुरु दक्षिणा के रूप में अंगूठा काट कर गुरु के चरणों में रख दिया और एक शिष्य गुरु की आज्ञा-पालन के लिए रात भर पानी में ही लेटे रहा। इतिहास में सैंकड़ों उदाहरण हैं जब शिष्यों ने गुरु भक्ति का प्रदर्शन किया। भले ही आज आचार्य पद्धति नहीं है फिर भी छात्रों का शिक्षक और शिक्षक का छात्रों के प्रति व्यवहार पवित्रतम होना ही चाहिए। शिक्षक एवं छात्र के सम्बन्धों में उच्च परम्पराओं का लोप क्यों हो रहा है, क्या कारण हैं, कारणों और उनके निदानों पर विचार करना चाहेंगे –

1. मीडिया - कहा जाता है कि मीडिया समाज का दर्पण है, चाहे वह प्रिन्ट मीडिया हो या इलैक्ट्रानिक मीडिया। आज तो यह मीडिया भी धन के चारों ओर घूम रहा है, धन कमाने के चक्कर में इसका भी दुरुपयोग हो रहा है। एक फिल्म अभिनेत्री ने कहा कि उसने फिल्म में अभद्र दृश्य, अपने घर की खराब आर्थिक स्थिति और माता-पिता का इलाज कराने के लिए मजबूरीवश, निगेटिव रील के रूप में दिए थे परन्तु उसकी इस मजबूरी का फायदा निर्माता ने वास्तविक दृश्य के रूप में उठाया। इस विवाद पर काफी हो-हल्ला भी हुआ परन्तु बात आई-गई हो गई। शिक्षिका और छात्र के दैहिक आकर्षण से सम्बन्धित कई फिल्में रिलीज हुईं। हाँलाकि विरोध करने वाले अनेक संगठन हैं परन्तु यह विरोध प्रदर्शन अल्पकालीन रहता है और जिनका मानसिक दिवाला ही निकल चुका है, उन बहुसंख्यकों की पसन्द और कुतर्कों के आगे, सभी विरोध काल के गाल में समा जाते हैं। यह अस्वस्थ मनोरंजन विशेषकर युवाओं के दिमाग को अस्वस्थ कर देता है क्योंकि मस्तिष्क पर लगभग 85 प्रतिशत प्रभाव देखने का ही पड़ता है। **आज आवश्यकता उस शिक्षा की है जो हमें इन सबसे बचाए रखे। आत्मनियन्त्रण रखने की शिक्षा, राजयोग के माध्यम से या अन्य किसी भी सुलभ माध्यम से शिक्षकों और शिक्षिकाओं के लिए अनिवार्य कर दी जानी चाहिए। शिक्षक पर राष्ट्र-निर्माण और नव पीढ़ी के निर्माण की जिम्मेदारी होती है, उसे इस जिम्मेदारी का अहसास कराया जाना चाहिए।**

एक समय था जब पादरियों पर सिनेमाघर में जाकर फिल्में आदि देखने पर पाबन्दी थी। एक पादरी को सिनेमा देखने की इच्छा जाग्रत हुई। वह मैनेजर के पास गया और आग्रह किया कि मुझे पिछले गेट से प्रवेश करा दिया जाए ताकि लोगों की नजर मुझ पर न पड़े। इस पर मैनेजर ने कहा कि मैं तो आपको पिछले गेट से प्रवेश करने दूँगा, कोई नहीं देखेगा। उसने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा कि लेकिन वो जो गॉड है, वह तो आपको देख ही रहा होगा। इस पर वे पादरी महोदय लज्जित हो गए। हम यहाँ किसी पर जबरदस्ती पूर्ण प्रतिबन्ध की बात नहीं कर रहे। हम यहाँ विचारों और व्यवहारों में परिवर्तन करके जिम्मेदारियों की ओर ध्यान खिंचवाना चाह रहे हैं क्योंकि बिना सहज स्वीकृति के, अत्यधिक

प्रतिबन्ध में, सीमा को लाँघने और तोड़ने की इच्छा प्रबल हो जाती है। शिक्षक स्वयमेव समझें कि उनकी जिम्मेदारी क्या है?

2. बेरोजगारी और आयु सीमा - बढ़ती हुई बेरोजगारी के चलते आज युवक-युवतियाँ किसी के घर जाकर या विद्यालयों में जाकर अल्पकालीन शिक्षण कार्य कर रहे हैं। वे कम आयु में, ट्युशन के द्वारा कमाने की ओर अग्रसर हैं। कई बार शिक्षक और छात्र के बीच आयु का अन्तर बहुत कम होता है। चारों ओर आज विकारों की धारा तीव्र गति से प्रवाहित हो रही है। ऐसे में पथ से भटकने की सम्भावना नकारी नहीं जा सकती है। शिक्षण कार्य के लिए एक उचित न्यूनतम आयु सीमा अवश्य ही होनी चाहिए, जो छात्र और शिक्षक में एक स्पष्ट भेद कर सके। शिक्षक पदों पर भर्ती होने वालों के छात्र जीवन या पारिवारिक जीवन के चरित्र का ब्यौरा भी देख लेना चाहिए।

3. चारित्रिक शिक्षा का अभाव - चरित्र का समाप्त हो जाना सबसे बड़ा कारण है इस शिक्षक-छात्र श्रेष्ठ परम्परा के उल्लंघन का। आज नैतिक शिक्षा इण्टरमीडिएट और डिग्री स्तर पर देने का चलन तो जैसे कि खत्म ही हो गया है और न ही छात्रों का इस ओर झुकाव ही रहा है। मूल्य आधारित शिक्षा छात्रों के लिए आवश्यक है, चाहे वे किसी भी कक्षा के हों। छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी मूल्य आधारित शिक्षा के कार्यक्रम समय-प्रति-समय अवश्य रखे जाने चाहिएँ। कई राज्यों ने, आबू पर्वत स्थित 'ज्ञान सरोवर अकादमी' में शिक्षकगण को मूल्य शिक्षा के लिए भेज कर सराहनीय शुरूआत की है। शिक्षक को चाहिए कि वह ऊँचे और आदर्श चरित्रों का वर्णन भी अध्यापन कार्य के मध्य करे और साथ ही स्वयं के ऊपर भी पूर्ण निगरानी रखे। धूम्रपान, तम्बाकू, सिनेमा आदि बहुत ही हानिकारक हैं। इनका प्रयोग शिक्षकों के लिए प्रतिबन्धित होना ही चाहिए। छात्रों को इनसे होने वाली हानियों के बारे में जागृत करें।

दैहिक रूप से मर मिटने वाले नहीं लेकिन चारित्रिक रूप से शिक्षक का अनुसरण करने वाले छात्र बनायें। उच्च भावनाएँ पैदा की जाएँ ताकि शिक्षक को छात्र वैसा ही सम्मान दें जैसा कि चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को दिया था। एक बार चन्द्रगुप्त गुरु के साथ जा रहा था। रास्ते में एक नाला सामने आया। गुरु ने कहा कि वह पार करके देखेंगे कि नाला कितना गहरा है। इस पर चन्द्रगुप्त ने उन्हें रोकते हुए कहा कि इसके लिए मैं स्वयं ही काफी हूँ। यदि मैं डूब गया तो कोई बात नहीं। आपके रहते अनेक चन्द्रगुप्त बन जायेंगे लेकिन आपको कोई हानि हुई तो मैं दूसरा चाणक्य कहाँ से लाऊँगा।

एक निश्चित मर्यादित दूरी छात्र और शिक्षक के मध्य अवश्य होनी चाहिए। इतना न घुलमिल जायें कि उनमें किसी सीमा का उल्लंघन करने का साहस जाग्रत हो जाये। **दैहिक आकर्षण की पतित भावनाओं पर कड़ाई से नियन्त्रण करना चाहिए।**

4. बढ़ता हुआ फैशन - कहा जाता है कि आदम जमाने में मनुष्य जंगलों में रहता था। अधिकांशत: नग्न ही रहता था। बाद में शरीर को वृक्षों के पत्तों आदि से ढकने का क्रम जंगल में शुरू हुआ। परन्तु आज बढ़ते हुए फैशन के कारण पढ़ा-लिखा सभ्य कहलाने वाला मानव "आदि मानव" ही नजर आता है। आज स्कूलों और कॉलेजों में विशेषकर विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने वाले अधिकांश छात्र-छात्राएँ जैसे कि मॉडल बन कर जा रहे होते हैं। कहीं से भी लगता नहीं है कि ये शिक्षार्थी जा रहे हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को उचित वस्त्र पहनने के लिए आगाह करे। उचित पहनावा विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए अनिवार्य होना चाहिए। जिस प्रकार से बी.एड. शिक्षा

के लिए छात्रों के लिए अनेक विश्वविद्यालयों में ड्रेस लागू की गई है।

क्या कार्य सम्भव नहीं है साधारण ड्रेस पहन कर ? क्या जीन्स पहन कर ही विज्ञान का विद्यार्थी और अध्यापक बना जा सकता है और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं ? हाँलाकि अनेक वैज्ञानिक हुए जो सादे जीवन और तीव्र बुद्धि वाले रहे परन्तु हम यहाँ वर्तमान में डॉ. अब्दुल कलाम जी का उदाहरण रखना चाहेंगे। क्या उन्होंने फैशनेबल वस्त्र पहन कर ही वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल कीं ? वास्तविकता यह है कि जिनका ध्यान अपने लक्ष्य और उपलब्धियों पर लगा रहता है वे अपना ध्यान वस्त्रों, फिल्मों, अनावश्यक पत्र-पत्रिकाओं में नहीं लगाते।

अन्त में हम निवेदन करना चाहेंगे कि कितने भी आधुनिक बनिए परन्तु कम-से-कम अध्यापक-छात्र परम्पराओं का तो उल्लंघन मत होने दीजिए। परमशिक्षक परमपिता परमात्मा शिव की हम सभी सन्तान आपस में आत्मिक रूप से भाई-भाई हैं। यदि इतना भी ध्यान रहे तो किसी भी श्रेष्ठ परम्परा का उल्लंघन, मन-वचन-कर्म से नहीं हो सकता। ▲

बन कर सबला कर ललकार

– ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

नर तुझे अबला कहे, घोर अनर्थ यह भूल है।
बन कर सबला कर ललकार,
यही कर्त्तव्य शस्त्र त्रिशूल है।।
निकल बाहर, दे हदों को तोड़,
विकारों से ले मुखड़ा मोड़।
झूठी है यह फैशन की होड़,
संकीर्णता को दे अब छोड़।।
अपने को कमल पुष्प समान बना ले,
बाकी सब फिजूल है।
नर तुझे अबला कहे ....

उठ अब, अपने स्वरूप को पहचान,
दिव्य गुणों से पा ले देवी-सा सम्मान।
कर विकारों को शिव पर बलिदान,
दे जगत को ईश्वरीय विद्या का दान।।
अतीत की देवी,
भविष्य की लक्ष्मी, यही तेरा उसूल है।
नर तुझे अबला कहे ....

सुख देने वाली वरदानी बन,
वीणा वादिनी असुर संहारिनी बन।
क्रूर दुर्गुणों को मिटा, कल्याणी बन,
शिव-शक्ति बन, दुख-हरणी बन।।
बढ़े कदम सतयुग की तरफ,
जीवन फिर काँटों से फूल है।
नर तुझे अबला कहे .... ❑❑

दिव्य अनुभूतियों की दास्तान

ब्रह्माकुमार बख्शी, शान्तिवन

मेरा जन्म वशिष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ। जब मैं ढाई वर्ष का था तो मेरी लौकिक माताजी ने शरीर त्याग दिया और 12 वर्ष के होते-होते पिताजी का साया भी सिर से उठ गया। मैं बाल्य अवस्था से ही भगवान से मन-ही-मन बातें करके अपने मन के प्रश्नों का समाधान माँगने का अभ्यस्त हो गया था। तीसरी कक्षा से ही मैंने ठाकुरों की पूजा करना, शिव के मन्दिर में बेल-पत्र चढ़ाना आरम्भ कर दिया था। गीता, रामायण, महाभारत, दुर्गा सप्तशती, सुखसागर आदि शास्त्र भी मैंने पढ़े। मात-पिता की पालना के अभाव तथा अकेलेपन ने भविष्य के बारे में मुझे चिन्ता से भर दिया और मैं मन-ही-मन भगवान से पूछता था कि मेरा क्या होगा। जब मैं दसवीं कक्षा में था तो एक दिन स्कूल के बाहर बैठे-बैठे भगवान से बातें करते-करते एक तीव्र संकल्प आया कि पढ़ाई के बाद यदि नौकरी करूँगा तो दु:ख बढ़ जायेंगे इसलिए संन्यास ले लेना अच्छा है। गुरु भी मैंने बनाया, उनसे गुरुमन्त्र भी लिया तथा 4-5 वर्ष लगातार मंगलवार के दिन व्रत करके एक कन्या को भोजन खिलाने का नियम भी निभाया।

स्कूल छोड़ने के बाद मैंने दो वर्ष चण्डीगढ़ में नौकरी की और फिर जालन्धर में डी.सी.एम. स्टोर पर सेल्समैन के रूप में कार्य करने लगा। वहाँ मैंने 10 वर्ष सेवा की। एक दिन प्रात: 3 बजे कमरे में एक देवी मेरे सामने आई और कहा - "मैं तेरी माँ हूँ, तेरी रक्षा कर रही हूँ।" (इस देवी की पहचान मुझे तब मिली जब 8-10 दिन बाद मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पहुँचा और मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के चित्र को देखा तथा परिचय प्राप्त किया। मुझे विश्वास हो गया कि इन्होंने ही मुझे दर्शन दिए थे।) देवी के दर्शन के तीन दिन बाद मुझे विष्णु का साक्षात्कार भी हुआ परन्तु कुछ समझ में नहीं आया।

इस घटना के चार दिन बाद ब्रह्माकुमारी आश्रम की एक माता दुकान पर आई और आध्यात्मिक प्रदर्शनी देखने का निमन्त्रण-पत्र मुझे दे गई। उसे पढ़ते ही मन में आया कि कुछ दिनों से चमत्कार सामने आ रहे हैं, अवश्य ही जीवन में कुछ परिवर्तन आने वाला है। तीन-चार दिन बाद मैं झिझकता हुआ मीठा बाजार स्थित ब्रह्माकुमारी केन्द्र पहुँचा। इससे पहले भी मुझे इस सेवाकेन्द्र में आने का निमन्त्रण मिला था परन्तु गुरु किया हुआ होने का बहाना बना कर मैंने टाल दिया था।

सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक चित्र-प्रदर्शनी समझने के बाद निमित्त शिक्षिका राज बहन ने मुझे पूछा कि प्रदर्शनी कैसी लगी। मैंने कहा – "बहुत अच्छी।" बहनजी ने कहा कि जो चीज अच्छी लगती है उसे ग्रहण कर लेना चाहिए, तो मैंने यह कह कर टाल दिया कि मैंने तो गुरु किया हुआ है। उन्होंने पूछा कि आपको गुरु से क्या-क्या प्राप्ति हुई है। मैंने कहा कि प्राप्ति तो तब हो जब हम पूरे नियम-मर्यादाओं पर चलें और उनके बताए अनुसार मन्त्र जाप करें। तब बहनजी ने मुझे केवल सात दिन में आधा-आधा घण्टा आकर कोर्स करने की राय दी और साथ ही कहा कि सात दिन के बाद आप अपनी प्राप्तियाँ हमें बताना। मैंने वहाँ तो 'हाँ' कर दी परन्तु फिर दो दिन सेवाकेन्द्र पर गया ही नहीं। तीसरे दिन प्रात: ढाई बजे

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा मेरे सामने आए और कहा –"मैं प्रजापिता ब्रह्मा हूँ, आपको प्रतिदिन क्लास करने के लिए आश्रम पर जाना है।"

जब कोर्स प्रारम्भ किया तो भक्ति मार्ग के शास्त्रों का ज्ञान बुद्धि में भरा होने के कारण मैं प्रश्न बहुत पूछता था इसलिए बहनें एक दिन पढ़ा कर अगले दिन दूसरी बड़ी बहन को मुझे पढ़ाने की जिम्मेवारी दे देती थीं। 'परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है' इस पर तो मैंने बहुत ही प्रश्न किए, फिर भी सन्तोषजनक समाधान न पा सका। लेकिन ज्ञान सागर भगवान शिव प्रातः ढाई-तीन बजे मुझे घर पर मेरे प्रश्नों के उत्तर देते रहे। मुझे निश्चयबुद्धि बनाने के लिए स्वयं बाबा को ही मुझे कोर्स कराना पड़ा।

ढाई मास तक नियमित ईश्वरीय ज्ञान सुनने के बाद मेरे मन में हलचल मची कि गुरु को छोड़ने से तो श्राप मिलता है इसलिए जाकर गुरु जी से पूछ लेता हूँ कि ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाना चाहिए या नहीं। वहाँ गया तो बहुत लम्बी लाइन में खड़े होने के बाद मेरा मिलने का नम्बर आया। मैं ब्रह्माकुमारियों के ज्ञान तथा शास्त्रों के ज्ञान के अन्तर के काफी प्रश्न लिख कर ले गया था परन्तु समायाभाव के कारण उनमें से कुछ ही मैं गुरु जी के सामने रख सका। प्रात:काल प्रजापिता ब्रह्मा, निराकार शिव परमात्मा तथा देवी-देवताओं के साक्षात्कार होने की बात भी मैंने उनको बताई और फिर पूछा कि मुझे वहाँ जाना चाहिए या नहीं। मेरी बात सुन कर उन्होंने 3 उत्तर दिए जिनसे मैं पूर्ण सन्तुष्ट हो गया। 1. जो चीज जहाँ से मिलती है उसे छोड़ना नहीं। 2. संन्यास धर्म में भी अपने-अपने कुल होते हैं, जो जिस कुल का होता है वहाँ से ही उसको प्राप्ति होती है। 3. आप उसी कुल के हो, कितनी भी परीक्षाएँ आएँ उस धर्म को छोड़ना नहीं।

बस, मेरी खुशी का तो पारावार नहीं रहा और मैं डेरे से वापस चल पड़ा। रास्ते में फिर व्यर्थ संकल्प तेज हो गए कि जितने प्रश्न मैं ले गया था, सब तो पूछ नहीं सका। इन प्रश्नों में उलझता हुआ सीधा सेवाकेन्द्र पर पहुँचा। योगाभ्यास चल रहा था, मैं भी अभ्यास में बैठ गया। परमपिता परमात्मा शिव से अपना सम्बन्ध जोड़ कर जो ब्रह्माकुमारी बहन योगाभ्यास करा रही थी उसकी दृष्टि जब मुझ आत्मा पर पड़ी तो उसने मेरे व्यर्थ संकल्पों को जान लिया और तुरन्त बोली - **"भाई जी, दो घोड़ों का सवार गिर जाता है इसलिए एक तरफ चलो।"** उनका भाव था कि प्यारे बाबा ने इतने अनुभव कराए हैं तो अब एक पर निश्चयबुद्धि होकर चलो। मैंने सभी प्रश्न वहीं छोड़ दिए।

चूँकि बचपन से ही मेरी बड़ी बहन तथा बड़े भाइयों ने मुझे पाला था, उन्हें मेरा ब्रह्माकुमार बनना नहीं भाया। उन्होंने नौकरी छोड़ कर घर पर रहने का आदेश मुझे दिया। साथ ही उम्र भर का खर्चा उठाने का संकल्प भी प्रकट किया। मैंने कहा कि मैं आप पर बोझ कब तक बना रहूँगा। मुझे तो शिव परमात्मा की प्राप्ति हो चुकी है, मुझे उन्हीं की सेवा में यह जीवन लगाना है। फिर वे मेरी दुकान के प्रबन्धक से मिले। लेकिन बाबा ने प्रबन्धक को निमित्त बना कर फैसला मेरे पक्ष में ही करवा दिया। प्रबन्धक ने सारी बात सुन कर मेरे भाई को कहा कि जब इसने अपना रास्ता चुन लिया है, यह ब्रह्मचारी बन गया है, दुनिया से उपराम हो चुका है तब आप इसकी शादी की क्यों सोच रहे हैं ? अगर आप जबरदस्ती शादी कर देंगे और यह संन्यासी बन गया या स्त्री को भी ब्रह्माकुमारी बना दिया तो क्या आपको अच्छा लगेगा ? इसलिए जैसे यह चाहता है करने दो। तब बड़े भाई ने सहर्ष छुट्टी दे दी।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में पहली बार 4 अप्रैल 1972 को मेरा आना हुआ। हमारे ग्रुप की निमित्त टीचर बहन ने मुझे

कहा कि सामान की सम्भाल करना, सोए मत रहना। जब सभी सो गए तो मेरी भी आँखें लगने लगी। मैं योगाभ्यास में था। जैसे ही आँखें बन्द हुईं तो लाइट के फरिश्ते-रूप वाली एक शक्ति इमर्ज हुई। उसने मुझे कहा– "आप आराम करो, मैं सामान की रक्षा करती हूँ।" रात ग्यारह बजे से प्रात: तीन बजे तक यही दृश्य चलता रहा। जब आँखें खोलूँ तो कोई नजर न आए। नींद आने लगे तो वह शक्ति पुन: उन्हीं शब्दों का उच्चारण करे। ये नजारे देखते-देखते प्यारे मधुबन घर पहुँचे तो कहा गया कि पहले बाबा के कमरे में जाओ। मैं ज्योंहि बापदादा के सामने बैठा तो मेरी बुद्धि की डोर शिव बाबा ने खींच ली और एक दृश्य दिखाया – "बहुत बड़ा गहरा समुद्र था, मैं उसमें नहा रहा था। ब्रह्मा बाबा मुझे वहाँ से निकाल बाहर लाए और कहा कि यह दुनिया दु:खों का गहरा सागर है इसलिए बाबा ने तुम्हें निकाला है।" मुझे पूर्ण निश्चय हो गया कि प्यारे बाबा ने ईश्वरीय सेवा के लिए ही चुन कर मुझे दैवी परिवार में शामिल किया है।

मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि अब नौकरी भी नहीं करनी है, केवल एक बाबा की ही सेवा करनी है। निमित्त शिक्षिका बहन ने मुझे चार वर्ष तक सेवाकेन्द्र पर रखा, इसके बाद एक मास की सेवा में मधुबन भेजा। उसी समय दीदी मनमोहिनी जी ने मुझे देहली में 'प्योरिटी' कार्यालय में सेवार्थ भेज दिया। वहाँ 16 वर्ष सेवा की। शान्तिवन में प्रिंटिंग प्रेस स्थापित होने पर बाबा ने 'ज्ञानामृत' की सेवा के लिए बुला लिया। **अब निराकार पिता शिव परमात्मा की याद में खुशी-खुशी दिन बीत रहे हैं। अब तो बाबा की एक ही आश है कि बच्चे जल्दी-जल्दी सम्पन्न बनें। प्रकृति भी अब परिवर्तन चाहती है। ब्रह्मा बाबा भी कहते हैं कि मैं बच्चों के इन्तजार में हूँ, जल्दी सम्पन्न बनें ताकि सभी मिल कर घर परमधाम का दरवाजा खोलें। मैं तो ब्रह्मा बाबा को यही कहता हूँ – "प्यारे बाबा, आपके स्नेह से अभी दिल भरा नहीं है।" प्यारे बाबा कहते हैं – "बच्चे, यह दुनिया तुम्हारे काम की नहीं है, तुम्हारी दुनिया तो स्वर्ग है, जो तुम्हारे सम्पूर्ण होने का इन्तजार कर रही है।" बाबा का यही महावाक्य कानों में गूँजता है कि ऐसी स्थिति बनाओ जो आँखों में निराकार बिन्दु शिव बाप समाया हुआ हो और आपके स्वरूप से ब्रह्मा बाप का फ़रिश्ता स्वरूप नजर आए।**

✦✦✦

आत्म-मन्थन

प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे, मंडला (म.प्र.)

यह आज क्या हो रहा !
संयम क्यों आज खो रहा ?
नैतिकता का पथ तज करके,
मनवा क्यों जहर बो रहा ?
ज्ञानचक्षु आज बंद हो गए,
मनुज निद्रा क्यों सो रहा ?
परमपिता से प्रीति तोड़ कर,
अबोध अब क्यों रो रहा ?
आया था तू यश करने को,
अपयश के वश क्यों हो रहा ?
मिलेंगी खुशियाँ आज समझ ले,
अभिशापों को क्यों ढो रहा ?
सच्चाई से जीवन रंग ले,
छोड़ो उसे अब तक जो रहा।

दिव्यता से सम्पन्न श्रीकृष्ण

पृष्ठ....01 का शेष

उन्हें राजाओं का भी राजा अथवा विश्व-महाराजन् (His Highness) और पूज्य महात्मन् (His Holiness) दोनों उपाधियाँ प्राप्त थीं। उन्हें 'श्री नारायण' भी कहा जाता है, जैसाकि उनकी स्तुति में "श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे .... हे नाथ नारायण वासुदेव" इत्यादि पदों से पता चलता है। अत: प्रश्न उठता है कि उन्होंने यह पूज्य-पद कैसे प्राप्त किया?

गीता के भगवान का महावाक्य है कि "मेरा यह ज्ञान राजाओं का भी राजा बनाने वाला, सभी विद्याओं का राजा है।" भगवान कहते हैं - "मेरी मत पर चलने से ही तुम्हें पृथ्वी का स्वराज्य अथवा स्वर्ग के सुख प्राप्त होंगे।" अत: सिद्ध है कि श्रीकृष्ण अपने पूर्व-जन्म में श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान से श्री नारायण पद को प्राप्त हुए थे। गीता का ज्ञान निराकार परमपिता परमात्मा शिव (जो कि श्रीकृष्ण के भी पारलौकिक परमपिता हैं) ने श्रीकृष्ण को दिया था, गीता तो श्रीकृष्ण की भी माता है। उस द्वारा भगवान ने ही (पूर्व जन्म में) नर (प्रजापिता ब्रह्मा) को श्री नारायण (श्रीकृष्ण) पद प्राप्त करने के योग्य बनाया था। अत: यदि हम श्रीकृष्ण की तरह पवित्र और गुणवान बनना चाहते हैं तो हमें भी सर्वश्रेष्ठ गीता-ज्ञान और सहज राजयोग सीखना चाहिए और परमपिता परमात्मा शिव से योग-युक्त होना चाहिए। **

अरे कृष्ण के भक्तो!

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

बात नहीं एक जेल की, उसमें बन्द एक वासुदेव की।
है सृष्टि के सारे कंसों की, झेल रही हर घर की देवकी।।
है पहरेदारी पाँच विकारों की, है शामत पराधीन बेचारों की।
लगा ताला देहाभिमान का इतना मोटा,
है भ्रष्ट मति मनमत वालों की।।

चमक रही बिजरी, गरज रही बदरी, बता रही भविष्यवाणी।
हुई प्रकट छवि मुस्कराती, योगबल से कृष्ण की पधरामणि।।
समझो पहले राज़ इन बातों का, फिर मनाना जन्माष्टमी।
सुनो पहले साज ज्ञान के, फिर ..... करना शंखध्वनि।।

बात नहीं स्थूल थपेड़ों की, तूफाँ की, जल-थल की।
विषय वैतरणी भव सागर की, है कहानी जग के हर मग की।।
जाने कितनों का माखन.... खा रहे जाने कितने कंस निर्मम।
हो रहा हनन निश दिन, निर्जन बन रहे कानन नन्दन।।
आखिर तो अब हाय-हाय, है वाह! वाह! में बदलनी।
बदलो पहले राह पुरानी...., फिर मनाना जन्माष्टमी।।

बात नहीं एक कालीदह की, है सारे वातावरण भयावह की।
था नहीं वो ऐसा जो चुरावे कपड़े गोपियों के, काटे गले चक्र से।
उसने बजाई बंसी चैन की, करता था नर्तन फखर से।।
डबल अहिंसक सर्वगुण सम्पन्न सम्पूर्ण सोलह कला।
योगीराज, स्वदर्शनी को, कह कैसे सकते भ्रष्ट भला।।
बातें आत्माओं की, अरे! उस शहजादे की न थी कोई पटरानी।
अरे कृष्ण के भक्तो! न करो अपमान उसका, न बातें मनमानी।।
पहले समझो राज़ इनके, फिर मनाना जन्माष्टमी।। **

1. नरवाना - सांसद भ्राता जयप्रकाश जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सीमा बहन। **2. हरिद्वार** - प्राचीन अवधूत मण्डल के महामण्डलेश्वर स्वामी हंसप्रकाश जी के 'पट्टाभिषेक समारोह' में शुभकामनाएँ देती हुई ब्र.कु. मीना बहन। **3. देहली (हरिनगर)** - तिहाड़ जेल के जेल महानिदेशक भ्राता अजय अग्रवाल को (उनके सेवानिवृत्त होने पर) ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुन्दर लाल भाई। साथ में हैं डी.आई.जी. भ्राता देविन्द्र सिंह। **4. अमृतसर** - रेलवे वर्कशॉप के मुख्य अभियन्ता भ्राता डी.के. सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राज बहन। **5. नई देहली (आर.के. पुरम)** - भूमि व विकास मंत्रालय के हाउसिंग निदेशक भ्राता हजारीलाल जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. आशा बहन। **6. आगरा (कमला नगर)** - डी.आई.जी. भ्राता पाण्डेय जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. विमला बहन। **7. देहली (खानपुर)** - 'हरे रामा - हरे कृष्णा मिशन' के स्थानीय निदेशक भ्राता महामन्त्र दास जी तथा स्वामी नित्यानन्द जी, ब्र.कु. आशा बहन का सम्मान करते हुए। **8. मुजफ्फरनगर** - 'आवास-विकास परिषद' अध्यक्ष तथा विधायक भ्राता चितरंजन स्वरूप जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पूनम बहन। **9. चण्डीगढ़ (सेक्टर 21)** - 'बदलती परिस्थितियों के लिए आध्यात्मिक समझ' कार्यक्रम में उपस्थित हैं बहन रजिन्द्र कौर औलख, सहायक डायरेक्टर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्स, ब्र.कु. कुसुम बहन तथा अन्य। **10. फिरोजपुर कैन्ट** - 'माइण्ड मैनेजमेण्ट एण्ड मेडिटेशन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए टेलीकॉम के महाप्रबन्धक भ्राता दीवान चन्द गुप्ता, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. शक्ति बहन तथा ब्र.कु. भारत भूषण भाई। **11. गोरखपुर** - विधायक भ्राता शिव प्रताप शुक्ला को ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु. भारत भूषण भाई।

1. मेरठ - पुलिस उप-महानिरीक्षक भ्राता गोपाल गुप्ता जी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. बहन शालिनी जी के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद दादी कमल सुन्दरी तथा ब्र.कु. मंजू बहन समूह चित्र में। **2. ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर (गुड़गाँव)** - कमिशनर भ्राता गुलाब सिंह सरोत को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शुक्ला बहन। **3. पटियाला** - 'श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण अभियान' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला रोटरी गवर्नर भ्राता हरबंस पाठक, पूर्व रोटरी गवर्नर भ्राता डी.के. सूद, भ्राता एस.बी. लाल मित्तल, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य। **4. देहली (मजलिस पार्क)** - 'सर्व धर्म सद्भाव' कार्यक्रम में गुरुद्वारा नानक प्याऊ के मुख्य ग्रन्थी भ्राता ज्ञानी संतोख सिंह सम्बोधित करते हुए। स्वामी सर्वानन्द जी, डॉ. एम.डी. थॉमस जी, 'रामकृष्ण मिशन' के स्वामी देशिकात्मानन्द जी, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य मंच पर विराजमान हैं। **5. जींद** - 'समाज सेवा अभियान' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए उपजिलाधीश भ्राता राजीव शर्मा जी। अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता जे.पी. कौशिक जी, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य भी साथ में विराजमान हैं। **6. फरीदाबाद (सेक्टर 19)** - स्थानीय कांग्रेस अध्यक्ष भ्राता बी.आर. ओझा, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. हरीश बहन तथा अन्य 'श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। **7. लुधियाना** - 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का उद्घाटन करते हुए गायत्री क्लब अध्यक्षा बहन अनिला जी, प्राचार्या बहन विजय जी, ब्र.कु. सरस्वती बहन, ब्र.कु. सुषमा बहन तथा अन्य। **8. देहली (रामनगर)** - बीस हजार काँवड़ियों को 'ओम शान्ति शिव सन्देश' पुस्तिका द्वारा ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रानी बहन, 'शिव काँवड़ सेवा समिति' के प्रधान भ्राता अशोक भारद्वाज तथा अन्य।

1. हांसी - 'श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण' अभियान के आगमन पर लॉयन्स क्लब, रोटरी क्लब, भारत विकास परिषद्, त्रिवेणी कला संगम के प्रधान एवं अन्य वरिष्ठ समाजसेवी, भ्राता अमीरचन्द तथा अन्य सदस्यों को स्मृतिचिन्ह भेंट करते हुए। 2. सिरसा (सद्भावना भवन) - 'श्रेष्ठ समाज की सुप्रभात' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में हैं बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता रमेश मेहता, रू. स्थान में मूल्य-शिक्षा की अध्यक्षा बहन अन्जू डूमरा, ब्र.कु. कृष्णा बहन, ब्र.कु. प्रेम भाई, ब्र.कु. राधा बहन तथा अन्य। 3. मऊ - डॉक्टर्स एवं स्टाफ नर्सों के साथ स्नेह-मिलन के पश्चात् . कु. विमला बहन तथा ब्र.कु. गोमा बहन समूह चित्र में। 4. सुलतानपुर (शाहगढ़) - आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए प्राचार्य भ्राता रमेश पाण्डेय जी। साथ में हैं ब्र.कु. दुर्गा बहन तथा अन्य। 5. देहली (ईस्ट पटेल नगर) - नाबार्ड टॉवर के अधिकारियों को तनाव मुक्त जीवन पर कोर्स कराने के बाद ब्र.कु. प्रकाश बहन, ब्र.कु. राजश्री बहन, ब्र.कु. सरस्वती बहन, उपमहाप्रबन्धक भ्राता रामचन्द्रन जी तथा अन्य समूह चित्र में। 6. मानसा - 'ओम शान्ति हेल्प लाइन' का उद्घाटन करते हुए डी.ई.टी. भ्राता विजय कुमार वर्मा। साथ में हैं ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. सूर्यमणि भाई तथा अन्य। 7. लखीमपुर खीरी - 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' के उद्घाटन के अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्षा डॉ. बहन इरा श्रीवास्तव का स्वागत करती हुई ब्र.कु. नीलम बहन। 8. बठिण्डा - विभिन्न संस्थाओं द्वारा निकाले गए 'नशा-मुक्ति चेतना अभियान' में भाग लेती हुई ब्र.कु. बहनें।

1. हापुड़ (सिम्भावली) - मेजर भ्राता एस.एस. बालाजी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सीतू दादी एवं ब्र.कु. ज्योति बहन। **2. देहली (कश्मीरी गेट)** - भ्राता कमल मालपाणी को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. रानी बहन। साथ में हैं ब्र.कु. मीरा बहन। **3. मोहाली** - लॉयन्स क्लब के अध्यक्ष डॉ. भ्राता हरभजन सिंह योगी तथा लॉयन्स क्लब के क्षेत्रीय अध्यक्ष भ्राता जे.एस. राही, ब्र.कु. भ्राता अमीरचन्द, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य को स्वर्ण मन्दिर का स्मृतिचिन्ह भेंट करते हुए। **4. फरीदकोट** - उपजिलाधीश भ्राता हुसनलाल जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रेम बहन। साथ में हैं ब्र.कु. डॉ. लेखराम भाई तथा ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल भाई। **5. सिरसा** - 'दैनिक जागरण' के मुख्य सम्पादक भ्राता सुरेन्द्र भाटिया जी, श्रेष्ठ समाज पुनर्निर्माण अभियान के यात्री ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य को स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित करते हुए। **6. सफीदों** - सिविल अस्पताल के चिकित्साधिकारी डॉ. भ्राता भूपेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरला बहन। **7. पालमपुर** - नायब तहसीलदार भ्राता कुंजूलाल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रेम बहन। **8. सीतापुर** - आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उद्योगपति भ्राता बी.सी. सेठिया। साथ में हैं ब्र.कु. सुमित्रा बहन तथा ब्र.कु. योगेश्वरी बहन। **9. उकलाना मण्डी (बरवाला)** - दैनिक भास्कर के वरिष्ठ पत्रकार भ्राता अशोक बंसल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **10. फिरोजपुर सिटी** - गुरुहरसहाय की अनाज मण्डी के प्रधान भ्राता राजकुमार जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. तृप्ता बहन। **11. गुराया** - डॉ. भ्राता सुरेश कुमार तिवारी को मान-पत्र प्रदान करती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **12. बरवाला** - राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com **Ph.No.: (02974) 228125, 228126** **bkatamad1@sancharnet.in**
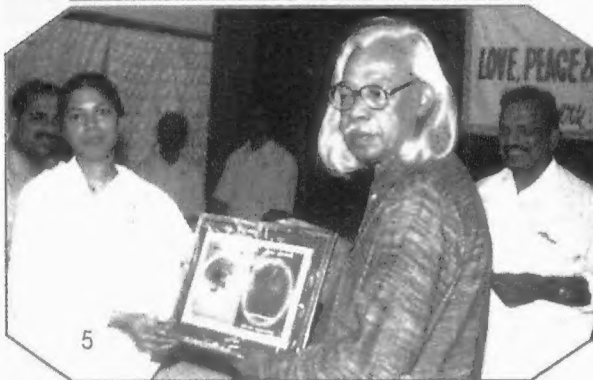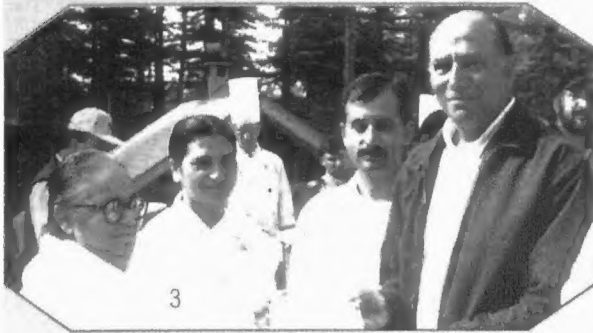
1. सिक्किम (नामची) - सिक्किम के मुख्यमन्त्री भ्राता पवन कुमार चामलिंग को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सकुन बहन। **2. चांदूर रेलवे** - सहयोग भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. सीता बहन, ब्र.कु. लीला बहन, ब्र.कु. रामनाथ भाई तथा अन्य। **3. शिमला (नालदेहरा)** - पाकिस्तान गोल्फ टीम के कप्तान ले. जनरल (निवृत्त) भ्राता तारिक अजीज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कृष्णा बहन। **4. भण्डारा रोड** - विश्वकल्याणी भवन का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी। साथ में हैं ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. लीला बहन तथा ब्र.कु. दुर्गा बहन। **5. कोलम (केरल)** - सुप्रसिद्ध लेखक भ्राता काक्कनादन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अनिला बहन। **6. दोंडाइचा** - नवनिर्मित सेवास्थान शान्तिधाम का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी। साथ में हैं ब्र.कु. लीला बहन, नगराध्यक्षा बहन नयन कुँवर रावल, भालचन्द्र भाई, जगन्नाथ भाई तथा ब्र.कु. द्वारका भाई। **7. खामगाँव** - नवनिर्मित भवन शिवालय का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. लीला बहन, ब्र.कु. रुक्मिणी बहन तथा ब्र.कु. रामनाथ भाई। **8. पूना (चंदन नगर)** - पद्म विभूषण पंडित बिरजु महाराज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मीनाक्षी बहन।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan – 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

काठमाण्डु - नेपाल के श्री 5 महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव सरकार, सिंह दरबार में आयोजित स्वागत समारोह में ब्र.कु. राज बहन से ईश्वरीय सेवाओं का विवरण सुनते हुए। साथ में हैं श्री 5 बड़ी महारानी कोमलराज्यलक्ष्मी देवी शाह, श्री 5 युवराज पारस तथा श्री 5 युवराज्ञी हिमानी।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर) - 'एकता एवं सद्भावना पहियों पर जीवन यात्रा' विषयक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, भारत के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मन्त्री भ्राता के.एच. मुनिअप्पा, बहन नागरतनम्मा, ब्र.कु. दिव्याप्रभा बहन, ब्र.कु. मीरा बहन, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई तथा अन्य।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर) - 'आध्यात्मिकता - व्यापार में सफलता की अगुआ शक्ति' विषयक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. मदन लाल शर्मा जी, ब्र.कु. योगिनी बहन, भ्राता राज गुप्ता जी तथा अन्य।

आबू रोड (शान्तिवन) - राष्ट्रीय युवा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी , एस.डी.एम. भ्राता महावीर खराडी जी, ब्र.कु. भ्राता रमेश शाह जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी तथा अन्य।

आबू रोड (शान्तिवन) - 'समय की पुकार - मूल्य आधारित समाज' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, केन्द्रीय समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड की अध्यक्षा बहन मृदुला सिन्हा, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य।